—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2740406
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/—
वार्षिक	रु० 100/—
विशेष वार्षिक	रु० 500/—
विदेशों मे (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

नवम्बर, 2006 वर्ष 5 अंक 09

या रब !

तेरे दर के सिवा और कोई दर नहीं
कोई तुझ से बड़ा और बर तर नहीं

कोई तेरा शरीक और हमसर नहीं
जो झुके और कहीं वह मेरा सर नहीं

पाक सब से है तू ऐ खुदाए अनाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम ग़ुलाम

(मुहम्मद सानी हसनी)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❐ बचपन जवानी और बुढ़ापा	सम्पादकीय	3
❐ कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी	5
❐ प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	6
❐ तहजीबे अख्लाक़	मौ०स० अबुल हसन अली हसनी	8
❐ सीरतुन्नबी	सै० सुलैमान नदवी	10
❐ संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी	14
❐ क्या अब इस्लाम की आवश्यकता नहीं रही?	मु० कुत्ब	17
❐ शुखगवार भविष्य	डॉ० मसऊदुल हसन उसमानी	20
❐ वन्दे मातरम ईश विरोधी	मजाराज विकाशानन्द ब्रह्मचारी	23
❐ आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	25
❐ आइन्दा नस्ल की फिक्र कीजिए	मौ० मु० राबे हसनी	26
❐ दहशत गर्दी का इल्जाम	अबू मर्गूब	27
❐ मां बाप की औलाद के प्रति जिम्मेदारी	मु० हसन अन्सारी	28
❐ अवध का आखिरी ताजदार	इदारा	30
❐ दास्ताने ग़म	वाजिद अली शाह अख्तर	30
❐ धार्मिक क्रान्ति का युग	श्री नेत्र पाण्डेय	31
❐ आंखों से सूखते आंसू	डॉ० एम०आर० जैन	33
❐ गेंदा	दिहाती चिकित्सक	35
❐ सत्य घोषणा		36
❐ इन्सानी किरदार की तश्कील में	अतीया खलील अरब	37
❐ रहम दिल राजा	इदारा	39
❐ अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी	40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

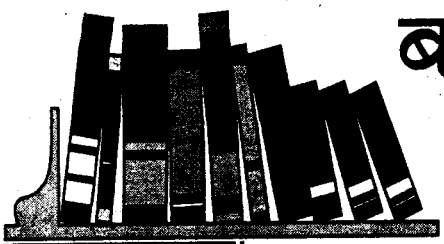

बचपन, जवानी और बुढ़ापा

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

बचपन का ज़माना भी अ़जीब है। अपना बचपन न याद आए तो इस वक़्त के बच्चों का अध्ययन कीजिए। देखिये एक बच्चा स्कूल जा रहा है कभी वह दौड़ पड़ता है, कभी उछल पड़ता है। एक फूल का दरख़्त मिला फूल खिले हुए थे, लपक कर फूल तोड़ने लगा, किसी तरफ़ से आवाज़ आई : क्या कर रहा है। बच्चा भाग खड़ा हुआ। आगे चलकर कुछ साथी मिल गये अब एक साथ चल रहे हैं। एक दूसरे को छेड़ रहे हैं। देखिये एक ने दूसरे को ऐसा धक्का दिया कि वह ज़मीन पर आ रहा । आगे एक अमरूद का बाग़ मिला अमरूद ख़ूब फले हुए थे। बाग़वाला कज़ाए हाजत के लिए चला गया था, सब बच्चे बाग़ में घुस गये, अमरूद तोड़ने लगे, इतने में बाग़ वाला आ गया उस ने बच्चों को ललकारा, बच्चे भागे, बाग़वान ने दौड़ाया, सब भाग निकले एक को पकड़ लिया दो तीन चपतें लगाईं, ख़ूब डांटा और प्राकृतिक भाषा बोल कर छोड़ दिया। बच्चे स्कूल देर से पहुंचे, हेड मास्टर साहिब ने डांट पिलाई उठा बैठी कराई।

बेशक बच्चों की यह हरकतें उन के सिहतमंद (स्वस्थ) होने की निशानियां हैं लेकिन क्या यह सब पसन्दीदा भी हैं? कदापि नहीं। जो बच्चा सर झुका कर धीरे धीरे पांव उठाता है और सीधे स्कूल जाता है वह शरीफ़ (शिष्ट) कहलाता है लेकिन याद रखिये कभी वह बीमार (अस्वस्थ) भी होता है।

एक बच्चा सीधे नहीं चलता कभी उछलता है कभी कुछ गाता है तो ख़ुशी की बात है बस उस पर कन्ट्रोल की ज़रूरत है अगर मां या बाप मअ़मूल (नियम) बना लें कि रोज़ाना सिर्फ़ दो मिनट यह सबक़ शफ़क़त के साथ दुहरा दिया करें कि बेटे रास्ते में शरारत न किया करो, किसी को नुक़सान न पहुंचाया करो, साथियों से लड़ाई न किया करो। स्कूल में भी अगर क्लास टीचर साहिब रोज़ाना क्लास में यही सबक़ दुहरा दिया करें तो बहुत अच्छा हो जाए। मुझे ख़ूब याद है कि बारिश का मौसम था अपने साथियों के साथ स्कूल जा रहा था। तब बाग़ात की भरमार थी एक बाग़ से गुज़र हुआ कई दरख़्तों के नीचे बड़े खुशरंग पक्के आम पड़े थे, बाग़ वाला लम्बे बाग़ के दूसरे किनारे आम चुन रहा था। हम लोगों ने ख़ूब अच्छे–अच्छे आम चुनकर एक झोला भर लिया। स्कूल पहुंचे मौलवी रौनक़ अ़ली साहिब को पेश किया। मौलवी साहिब बहुत खुश हुए लेकिन बच्चों की फ़ितरत का ख़याल करते हुए पूछ लिया : यह आम तो तुम लोगों ने रास्ते के बाग़ से उठाए हैं? मैं बोल पड़ा : हां मौलवी साहिब हमारे रास्ते में कई बड़े–बड़े बाग़ मिलते हैं। यह आम बहुत मीठे हैं इन में एक आम भी खट्टा नहीं है। मौलवी साहिब ने सब साथियों को बुलाया और समझाना शुरूअ़ किया : मेरे अ़ज़ीज़ बच्चो तुम तो बहुत अच्छे हो और बड़े समझदार हो, सुनो किसी के बाग़ से बाग़ वाले की इजाज़त के बिना आम उठाना बहुत बुरा है। तुम सब मेरा कहना मानो और यह आम जहां से उठाया है वहीं डाल दो। हम लोगों ने कहा मौलवी साहिब बाग़ वाला कहता है : पड़े आम खा सकते हो पेड़ से तोड़ो नहीं। मौलवी साहिब ने कहा बाग़ वाला एक दो आम खा लेने को मुआ़फ़ कर देता होगा जब कि यह भी ठीक नहीं है लेकिन झोला भर कर ले जाने की तो इजाज़त नहीं दे सकता यह आम तो जाकर उसी पेड़ के नीचे डाल दो जहां से

उठाया था। यह बात हम लोगों को बहुत खली लेकिन हम लोगों ने इस पर अमल किया और फिर कभी किसी बाग़ से एक आम भी न उठाया। बचपन में बच्चों में तरह तरह के शौक़ पैदा होते हैं। जो चीज़ देखी पसन्द आई अपनाने लगे। मेरे दान्त सिनाअी (बने हुए) हैं मेरा पोता जो तीन साल का है जब मैं ने दान्त निकाल कर साफ़ किये और मुंह में लगाया तो वह ध्यान से देखता रहा उस के बअद उस ने मुताल्बा किया कि हम भी दान्त खाएं गे। पहले तो अपने दांन्त निकालने की कोशिश की ज़ाहिर है नाकाम रहा। फिर मेरे दान्तों का मुतालबा किया मैं ने निकालकर दे दिया उस ने कोशिश की कि मुंह में फिट करे लेकिन नाकाम रहा और मुझे वापस कर दिया फिर जब मैं ने अपने मुंह में लगा लिया तो ख़ूब हंसा।

कभी छोटा बच्चा बेजा शौक़ की तरफ़ माइल होता है। बच्ची है बच्चों का लिबास पहनने लगती है। बच्चा है बच्चियों का लिबास और ज़ेवरात पसन्द करने लगता है, नाचने की आदत अपनाता है (ख़ासतौर से टीवी देखकर) मुंह लाल करने के लिए सादा पान खाता है वग़ैरा बड़ों का फ़र्ज़ है कि बच्चों के ग़लत शौक़ की हिकमत से इस्लाह़ करें। मगर वह क्या इस्लाह़ करेंगे जो ख़ुद बच्चों के साथ टीवी और सनीमा के फ़ुहश मनाज़िर देखते हैं। हम अल्लाह तआला से उन के लिए दुआ करते हैं कि उनको इन बुराइयों से बचने की तौफ़ीक़ दे।

जवानी दीवानी तो मशहूर ही है। जवानी अगर नेक मां बाप और अच्छे उस्तादों की तर्बियत से गुज़रती हुई आई है तो उम्मीद है कि अच्छे रास्ते पर रहेगी। वरना वह एक बार तो अपना दीवानापन ज़रूर दिखाएगी जिन्सी बेराह रवी, ताक़त का ग़ुरूर, पैसों का ग़ुरूर, चोरी, डकैती, क़त्ल जैसे पाप दीवानी जवानी ही की देन हैं। ऐसे जवानों की इस्लाह़ या तो ख़ूब ठोकर खा कर होती है या फिर ऐसे दोष ज़िन्दगी के साथ रहते हैं। ऐसे जवान अपनी इस्लाह़ के बारे में सोचते भी नहीं। दूसरे नेक जवान उनकी इस्लाह़ की कोशिश करें। उनसे हमदर्दी जताते हुए किसी नेक आदमी से मिलाएं इन्शा अल्लाह उम्मीद है कि उन को फ़ाइदा पहुंचेगा। जो नवजवान तबलीग़ से जुड़े हुए हैं वह ऐसे आज़ाद नव जवानों को तब्लीग़ी जमाअत से जोड़ें यह तजरिबा नब्बे फ़ीसद काम्याब साबित हुआ है। पढ़े लिखे आज़ाद नवजवानों की इस्लाह़ के लिए उन का रूजहान मअ़लूम कर के किसी ऐसे आ़लिम से जोड़ना चाहिए जिस से उन की मुनासबत मअ़लूम होती हो। दुआ के हथियार को कभी हाथ से न जाने देना चाहिए इसलिए कि ख़ैर व हिदायत के फ़ैसले तो ऊपर से ही होते हैं।

कर जवानी में इ़बादत, काहिली अच्छी नहीं।
जब बुढ़ापा आ गया कुछ बात बन पड़ती नहीं।।
हाथ में और पांव में यह ज़ोर यह ताक़त कहां।
नुत्क़ में यह बात बीनाई में यह क़ुव्वत कहां।।
है बुढ़ापा भी ग़नीमत गर जवानी हो चुकी।
यह बुढ़ापा भी न होगा मौत जिस दम आ गई।।

बुढ़ापा अक्सर बूढ़े लोग सारे मराहिल से गुज़र कर ठीक ठाक हो जाते हैं। और कितने बूढ़े तो अपने तजुरिबात से नवजवानों को फ़ाइदा पहुंचाते हैं। कितने इ़ल्म वाले बुज़ुर्ग एक आ़लम की इस्लाह़ का सबब बनते हैं, लेकिन बअ़ज़ बूढ़ों को भी शैतान उन की फ़ितरत के लिहाज़ से फांसता है कि क़ब्र तक साथ नहीं छोड़ता। बअ़ज़ बूढ़ों को देखा कि उनकी जवानी की मुनश्शियात (नशा करने) की आ़दत ने उन को क़ब्र तक पहुंचा ही के छोड़ा। बअ़ज़ बूढ़ों को देखा कि वह जवानी ही से नमाज़ रोज़ा से दूर रहे और उसी ह़ाल में क़ब्र पहुंच गये। यह बातें कुछ अपनी बड़ाई के लिए नहीं कर रहा हूं बस अल्लाह का करम है वर्ना मैं भी उसी ह़ाल का होता।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

कुरआन की शिक्षा

मौ० मंजूर नोमानी

किसी और के इखतियार में कुछ भी नहीं

और कहीं–कहीं अल्लाह तआला की इसी शान और सिफत के बयान में यह इखतियार किया गया है कि उस की खुदाई में उस के सिवा किसी को कुछ भी इख्तियार नहीं और कोई भी हस्ती (जात–व्यक्तित्व) उसके सिवा ऐसी नहीं जिस के कब्जे और इखतियार में कुछ हो, और जो किसी को कुछ दे सके या इससे कुछ छीन सके – मसलन् (उदाहरणार्थ) सूरए–अहजाब में फर्माया गया है।

तर्जमा – ऐ नबी स०! आप इन मुशरिकों से कहिये, बताओ वह कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सके, अगर वह किसी बुरी हालत में तुम्हें मुबतला करना चाहे, या तुम्हारे साथ कुछ मेहरबानी, का इरादा करे। और नहीं पा सकते वह अल्लाह के सिवा। अपना कोई हिमायती और मददगार। (अहजाब : १७)

और सूरए–फातिर में फर्माया –

तर्जमा : अल्लाह अपने बन्दों के लिए जिस रहमत का दरवाजा खोले उस को कोई रोक सकने वाला नहीं, और वह जो कुछ रोके उस को कोई जारी (चालू) कर सकने वाला नहीं, सिवा उसके। और वह जबर्दस्त और हिकमत वाला है। (फातिर : २)

और सूरए–अनआम में फर्माया –

तर्जमा : – ऐ नबी (स०) इन से कहिये बतलाओ अगर अल्लाह तुम्हारी शुनवाई (सुनने) की ताकत और तुम्हारी बीनाई (देखने की ताकत) छीन ले, और तुम्हें अंधा बहरा बना दे और तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दे (यानी सोचने–समझने की ताकत छीन ले और तुम्हारी अकलें बिगाड़ दे) तो अल्लाह के सिवा कौन मअबूद है जो यह चीजें तुम्हें दे सके। (अनआम : ४६)

और सूरए–मुलक में फरमाया :–

तर्जमा : अगर अल्लाह अपना रिज्क रोक ले और बन्द कर दे, तो वह कौन है जो तुम्हें रिज्क दे सके। (मुल्क:२१)

फिर इसी सूरे में चंद आयतों के बाद फर्माया :

तर्जमा : ऐ नबी (स०) इन से कहिये बतलाओ कि तुम्हारा पानी (जो कुंवों की तह से निकलता है) अगर गाइब हो जाये (यानी अल्लाह इसे बिल्कुल गाइब और नायाब कर दे) तो कौन तुम्हारे लिये जमीन के सोते (चश्मे) का पानी ला सकता है। (मुल्क : ३०)

अल्लाह तआला बड़ी रहमत वाला और निहायत मेहरबान है। गुनाहों का बखशने वाला और तौबा कबूल करने वाला है।

जैसा कि इससे पहले बयान किया जा चुका है। खुदा के बारे में बहुत सी कौमें इस गलत–फहमी में मुबतला रही हैं कि उन्होंने उस को एक जलाली शहनशाह समझा जो कहर–व–गजब से भरपूर है और जिस को राजी और खुश करना बड़ा ही मुश्किल है, मानो आम इनसानों के बस की बात ही नहीं है और जिस के पास गुनाहगार और खताकार बन्दों के लिए बस लानत ही लानत (धिक्कार–फटकार है, और गजब ही गजब और अजाब ही अजाब, कष्ट दुख तथागुनाह की सजा है।)

और अगर वह रहीम और मेहरबान है तो भी उस की रहमत और मेहरबानी बस किसी खास खानदान या खास नस्ल और कौम के लिए ही महदूद (सीमित) है। बाकी सारी दुन्या के लिए वह बड़ा सख्तगीर और जब्बार व कहहार हाकिम है।

वाकिआ यह है कि खुदा के बारे में यही गलत–फहमी और गुमराही बहुत सी कौमों के शिर्क का सबब बनी है। उन्होंने अपने को देखा कि उन की जिन्दगी गुनाहों से पाक (वंचित) नहीं है और इस दुन्या में नेकी और पाकी वाली जिन्दगी गुजारना मानो उन के बस की बात ही नही है। और अपनी जिहालत (ना समझी) से उन्होंने समझा कि खुदा ऐसा सखतगीर (निर्दयी–सख्ती से पकड़ करने वाला), और जलाली (कहर–व–गजब वाला) है कि खताकारों और गुनहगारों पर वह हरगिज रहम और मेहरबानी नहीं कर सकता। इसलिए खुदा की तरफ से तो वे बिल्कुल

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

नेकी और परहेजगारी पर मदद

मुजाहिद की मदद उसके घर की खबरगीरी करनेवाले को जिहाद का सवाब

हजरत जैद बिन खालिदिलजुहनी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगर किसी ने जिहाद करने वाले के लिए सामान मुहय्या कर दिया तो उसको जिहाद का अज्र मिलेगा। और जिसने किसी गाजी की गैबत में उसके घरवालों की खबर की तो उसको हिजाद का अज्र मिलेगा। (बुखारी)

हजरत अबू सअीद अलखुदरी (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक फौज बनी हुदैल से बनी लहयान की तरफ भेजी और फरमाया, जिस घर में दो आदमी हों तो एक फौज में शरीक हो। अज्र दोनों को मिलेगा। (मुस्लिम)

बच्चे के हज से मां को सवाब

हजरत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रौहा में कुछ सवारों से मिले और पूछा तुम कौन हो? कहा हम मुसलमान हैं। और फिर पूछा आप कौन हैं, आपने फरमाया मैं अल्लाह का रसूल हूं। यह सुनकर एक औरत ने आपकी तरफ बच्चे को बढ़ाया और कहा या रसूलल्लाह! इसके लिए हज हो सकता है? आपने फरमाया, हां, मगर सवाब तुमको मिलेगा। (मुस्लिम)

खजांची का हुक्म पर खुशी से अमल करनी भी एक सदकः है

हजरत अबू मूसा (र०) अश्अरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मुसलमान अमानतदार खजांची हुक्म पर पूरा–पूरा अमल–दरामद करे, और खुशदिली के साथ उस को दे जिस के लिए हुक्म मिला है। वह भी एक तरह का (गोया अपने पास से) सदकः करने वाला है। (बुखारी–मुस्लिम)

आम खैरख्वाही

दीन खैरख्वाही का नाम है

हजरत अबू रुकय्या (र०) बिन तमीम अद्दारी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, दीन खैरख्वाही का नाम है। हमने पूछा किस के लिए? फरमाया अल्लाह के लिए, उसकी किताब के लिए उसके रसूल के लिए, मुसलमानों के अमीर के लिए और आम मुसलमानों के लिए । (मुस्लिम)

खैरख्वाही पर बैअत

हजरत जरीर (र०) बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस बात पर बैअत की कि हम नमाज पढ़ेंगे, जकात देंगे, और मुसलमानों की खैरख्वाही करेंगे।

(बुखारी, मुस्लिम)

ईमान की एक शर्त

हजरत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया, मोमिन वह है जो अपने भाई के लिए वही चाहे जो अपने लिए चाहता है। (बुखारी मुस्लिम)

बुराई कैसे रोकी जाये

हजरत अबू सअीद (र०) अलखुदरी से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाते सुना कि अगर तुम किसी को बुराई करते देखो तो अपने हाथ से रोको, अगर हाथ से न रोक सको तो जबान से मना करो, और अगर ज़बान से भी न रोक सको तो अपने दिल में बुरा समझो, और यह ईमान का कमजोर तरीन दर्जा है। (मुस्लिम)

बेअमलों और बदअमलों से जिहाद

हजरत इब्नि मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने हर नबी की उम्मत में हवारिय्यीन और असहाब पैदा किये, वह उनकी सुन्नतों को इख्तियार करते थे और उनके हुक्म की इक्तिदा करते थे, फिर पीछे आने वाले उनके जानशीन हुए, वह कहते सब थे और अमल कुछ न करते थे, और करते वह थे जिस का हुक्म नहीं दिया गया। पस जो उन से अपने हाथ से लड़े वह मोमिन है और जो अपने दिल से लड़े वह मोमिन है। इसके अलावा ईमान का एक जर्रः नहीं। (मुस्लिम)

हक बात कहना और मलामत

की परवाह न करना

हजरत अुबादः (र०) बिन सामित से रिवायत है कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बैअत की कि हम सुनेंगे और मानेंगे। तंगी में, आसानी में, राहत में और तकलीफ में, ख्वाह हम पर बेइन्साफी की जाये या खुदगर्जी और नीज इस बात पर कि हम हुकूमत में अहले हुकूमत से न लड़ें। जब तक खुला हुआ कुफ्र न देखें, या अल्लाह तआला की तरफ से इसके बारे में कोई दलील हो और इस पर कि हक बात कहें जहां भी हों और अल्लाह के बारे में मलामत करने वालों से न डरें। (बुखारी–मुस्लिम)

अगर बुरी बात की रोक–थाम न की गयी तो आम मुसीबत आ जायेगी

हजरत नुअमान बिन बशीर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह की मना की हुई चीजों से रूकने वाले की और उसका इर्तिकाब करने वाले की मिसाल ऐसी है कि कुछ लोगों ने एक कश्ती पर कुरअः डाला तो उनके कुछ लोग ऊपर के हिस्से में रहे और बाज नीचे के हिस्से में। नीचे वाले ऊपर पानी लेने जाते और ऊपर वालों के पास से गुजरते तो वह बहुत खफा होते थे। नीचे वालों ने कहा कि हम नीचे के हिस्से में सूराख कर लेंगे तो फिर ऊपर वालों को तकलीफ न होगी। अगर ऊपर वाले उनको उनके इरादे से बाज न रखेंगे तो सब के सब हलाक हो जाएं गे और अगर उनके हाथों को पकड़ लिया तो सब नजात पा जाएंगे। (बुखारी)

(पृष्ठ १० का शेष)

नाउम्मीद हो गये और शैतान ने उन के कान में फूंका कि ख़ुदा की मख़लूक़ में कुछ हस्तियां ऐसी भी हैं जो अपनी नेकी और पाकी की वजह से अल्लाह की बड़ी मुकर्रब (अल्लाह के करीब) और बड़ी प्यारी हैं, और अल्लाह ने उन्हें भी बहुत कुछ इखतियार दे रखा है, और उन में खुदा का सा जलाल और गुस्सा भी नही है और उन्हें राजी करना खुदा की तरह जियादा मुश्किल भी नहीं है, इसलिए उन के दामनों में तुम जैसे गुनहगारों को भी पनाह मिल सकती है, और उनसे तअल्लुक जोड़ने से खुदा के अजाब और पकड़ से बचा जा सकता है।

बस इसी को उन्होंने आसान समझा और खुदा से ना–उम्मीद होकर शैतान की बतलाई हुयी इन हस्तियों की ताजीम (आदर) व इबादत और उनके नाम की नजर–व–नियाज इस उम्मीद पर करने लगे कि उनकी मेहरबानी से हम सर–सब्ज (आबाद) रहेंगे, और उन की तवज्जुह (ध्यान–कृपा) और इनायत से हमारे काम बनते रहेंगे और खुदा की पकड़ और उसके अजाब से भी उन का यह तअल्लुक हमें बचा लेगा।

इस तरह अक्सर मुशरिक कौमों के हालात और ख्यालात पर गहरी नजर डालने से यही पता चलता है कि शिर्क में उनके मुब्तला होने की वजह उन की यही गुम्राही रही है कि खुदा की रहमत व बखशिश और जूद–व–करम की सिफत को उन्होंने नहीं जमना और उनको सिर्फ कहहार–व–जब्बार और निहायत सखतगीर किस्म का जलाली बादशाह समझ कर उस की तरफ से ना उम्मीद हो गये और शैतान की बतायी हुयी वाकई (सच्ची) या सिर्फ फर्जी (खयाली काल्पनिक) और वह्मी (भ्रमी) हस्तियों को उन्होंने अपनी उम्मीदों का किबला (केन्द्र) बना लिया।

अगर वे खुदा की रहमत की बेइन्तिहा वुसअत (कुशादगी) और उसकी गफ्फारियत (माफ करना) और बखशिश की शान से वाकिफ होते तो इस शिर्क में हरगिज गिरफ्तार न होते।

इसी लिये कुरआने–मजीद में – जो इस दुन्या के लिए आखिरी हिदायत नामा (निर्देशपत्र) है– अल्लाह तआला की इस शान और सिफत को बहुत जियादा उजागर किया गया है, और बिला–मुबालगा सैकड़ों जगह अलग–अलग पैरायों (तरीकों) में अल्लाह की शाने–रहमत व शफकत (दया मेहरबानी) और बखशिश व गफ्फारियत और मखलूक के साथ उस की नीयत–व–मुहब्बत् को बयान फर्माया गया है। जिन खुश–नसीबों को कुर्आने मजीद की तिलावत (पढ़ना) की तौफीक होती है, वे जानते हैं कि इसमें कितनी जगह अल्लाह–तआला को गफूरूर्रहीम, रऊफुर्रहीम, खैरूर्राहिमीन और अरहमुर्राहिमीन की सिफात से याद किया गया है–यहां तक कि "बिस्मिल्लाह" जो कुरआने मजीद का सर–नामाः है इसमें उसकी सिफ्ते–रहमत ही का तजकिरा है। इसी तरह की बिल्कुल शुरू की आयतों में सब से पहले उस की सिफते–रूबूबियत• (पालने की सिफत) और रहमत ही का तआरूफ (परिचय) कराया गया है। फर्माया गया–

तर्जमा : तमाम तअरीफें अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहानों का रब है, रहमान है रहीम है। (फातिहः)

तहज़ीबे अख़लाक़ और नफ़्स की पाकी

तहजीबे अख़लाक़ व नफ्स की पाकी की बुन्यादी तालीमात

हम यहां कुछ आयाते कुरआनी और अहादीस नबवी का जिक्र करते हैं जो तहजीब अखलाक और नफस की पाकी की बुन्यादी तालीमात फराहम करती हैं और रूहानी अमराज के जहर का तिर्याक हैं और बेहतरीन इलाज हैं, अल्लाह तआला का इरशाद है, "भला जिसने पैदा किया वह बेखबर है। वह तो पोशीदा बातों का जानने वाला और हर चीज से आगाह है।" (सूर : अल्मुल्क–४)।

अल्लाह के रसूल० ने फरमाया, "मेरे रब ने मेरी तरबियत फरमाई, और बड़ी अच्छी तरबियत फरमाई"।

इन तालीमात की जो शख्स भी पाबन्दी करेगा और सन्जीदगी व सच्चे दिल से इनका लेहाज व एहतेमाम करेगा वह तहजीब, अखलाक और नफस की पाकी के गौहरे मकसूद को पा लेगा। और अगर पूरी सोसाइटी इनको अपना मामूल बना ले तो वह नमूने का समाज बन जायेगा। यहां इनका तर्जमा दिया जाता है :–

इखलास :

"और उनको हुक्म तो यही हुआ था कि इखलासे अमल के साथ खुदा की इबादत करें और एकसू होकर नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें, और यही सच्चा दीन है।" (सूर : अलबय्यिनः)

"देखो खालिस इबादत खुदा ही के लिए (जेबा है) (सूर : अल्जुमर–३)

सच्ची तौबा :

"मोमिनो । खुदा के आगे साफ दिल से तौबा करो," (सूर : तहरीम–८)

सब्र व दरगुजर :

"और जो सब्र करे और कुसूर माफ कर दे तो यह हिम्मत के काम हैं।" (सूर : शूरा –४३)

खुदा हर जगह है :

"और तुम जहां कहीं हो वह तुम्हारे साथ है।"(सूर : हदीद–४)

"वह आंखों की खयानत को जानता है और जो बातें सीनों में पोशीदा हैं उन को भी।" (सूर : गाफिर–१६)

तकवा :

"मोमिनो खुदा से डरो जैसा कि उससे डरने का हक हैं।" (सूर : आले इमरान–१०२)

"मोमिनो । खुदा से डरो, और बात सीधी कहा करो।" (सूर : अहजाब–७०)

यकीन व तवक्कुल :

"और खुदा ही पर मोमिनों को भरोसा रखना चाहिए" (सूर : इब्राहीम–११)

"और उस (खुदा) जिन्दा पर भरोसा रखो जो कभी नहीं मरेगा," (सूर : फुरकान–५८)

इस्तिकामत :

"(ऐ पैगम्बर) जैसा तुम को हुक्म होता है उस पर कायम रहो।" (सूर : हूद–११२)

"जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब खुदा है। फिर वह उस पर कायम रहे तो उनको न कुछ खौफ होगा और न वह गमनाक होंगे। यही जन्नत वाले हैं कि हमेशा उसमें रहेंगे। यह उसका बदला है जो वह किया करते थे। (सूर : अहकाफ – १३, १४)

किताब व सुन्नत की मजबूत पकड़ :

"और अगर किसी बात में तुम में इख्तेलाफ हो तो उसमें खुदा और उसके रसूल (के हुक्म) की तरफ रूजू करो।" (सूर : निसा–५६)।" "सो जो चीज पैगम्बर तुम को दें वह ले लो और जिस से मना करें उस से बाज रहो।" (सूर : हशर–७)

अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत :

"लेकिन जो ईमान वाले हैं, वह तो खुदा ही के सब से ज्यादा दोस्तदार हैं।" (सूर : बक्रः १६५) "कह दो कि अगर तुम्हारे बाप और बेटे और भाई और औरतें और खानदान के आदमी, और माल जो तुम कमाते हो और तिजारत जिस के मद्दा होने से तुम डरते हो, और मकानात जिन को तुम पसन्द करते हो, खुदा और उसके रसूल से और खुदा की राह में जिहाद करने से तुम्हें ज्यादा अजीज हों तो ठहरे रहो। यहां तक कि खुद अपना हुक्म (यानी अजाब) भेजें।" (सूर : तौबा–२४)

नेकी के कामों में मदद :

"और (देखो) नेकी व परहेजगारी के कामों में एक दूसरे की मदद किया करो। और गुनाह व जुल्म की बातों में

मदद न किया करो। और खुदा से डरते रहो बेशक अल्लाह का अजाब सख्त है।" (सूर : मायदा–२)

इस्लामी भाईचारा :

"मोमिन तो आपस में भाई–भाई हैं।" (सूर : हुजरात–१०)

अमानत की अदायगी :

"खुदा तुमको हुक्म देता है कि अमानत वालों की अमानतें उनके हवाले कर दिया करो।" (सूर : निसा – ५८)

लोगों में सुलह कराना :

"उन लोगों की बहुत सी सलाह अच्छी नहीं। हां उस शख्स की सलाह अच्छी हो सकती है जो खैरात या नेक बातों या लोगों में सुलह करने को कहे।" (सूर : निसा–११४) "तुम खुदा से डरो और आपस में सुलह रखो।" (सूरः अनफाल–१)

नर्मी व तवाजो :

"और मोमिनों से खातिर और तवाजो से पेश आना।" (सूर : हिज्र–८८)

"तो तुम भी यतीम पर सितम न करना, और मांगने वाले को झिड़की न देना।" (सूर : जुहा–९–१०)

नबी स० का इत्तिबा :

"ऐ पैगम्बर ! कह दो कि अगर तुम खुदा को दोस्त रखते हो तो मेरी पैरवी करो, खुदा भी तुम्हें दोस्त रखेगा, और तुम्हारे गुनाह मॉफ कर देगा। खुदा बख्शने वाला मेहरबान है।" (सूर : आले इमरान–३१)

अल्लाह से उम्मीद और डर :

"और मुझी से डरते रहो" (सूरः बकरः – ४०) "(ऐ पैगम्बर मेरी तरफ से लोगों से) कह दो कि ऐ मेरे बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज्यादती की है, खुदा की रहमत से नाउम्मीद न होना, खुदा तो सब गुनाहों को बख्श देता है और वह तो बख्शने वाला मेहरबान है।" (सूर : जुमर–५३) "(सुनलो) कि खुदा की पकड़ से वही लोग निडर होते हैं, जो खसारा पाने वाले हैं।"(सूर : एराफ ९९) "खुदा की रहमत से बेईमान लोग नाउम्मीद हुआ करते हैं।" (सूरः यूसुफ–८७)

जुहद व कनाअत :

"माल और बेटे तो दुन्या की ज़िन्दगी की जीनत हैं और नेकियां जो बाकी रहने वाली हैं वह सवाब के लेहाज से तुम्हारे रब के यहां बहुत अच्छी और उम्मीद के लेहाज से बहुत बेहतर है।" (सूर : कहफ–४६) "और यह दुनिया की जिन्दगी तो सिर्फ खेल और तमाशा है और हमेशा की जिन्दगी का मकाम तो आखिरत का घर है। काश यह लोग समझते।" (सूरः अनकबूत–६४)

ईसार व कुर्बानी :

"और उन को अपनी जानों से मुकद्दस रखते हैं चाहे उनको खुद एहतियाज ही हो।" (सूरः हश्र–९) "और इसके बावजूद कि उनको खुद खाने की हाजत है, फकीरों और यतीमों और कैदियों को खिलाते हैं।" (सूर : दहर–८)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अहादीस की रोशनी में

मुफ़्ती असअ़द क़ासिम संभली

इस वक़्त हज़रत ईसा (अ०) आसमान पर हैं। क़ियामत के करीब वह दज्जाल को कत्ल करने के लिए दोबारा जमीन पर उतरेंगे। वह दमिश्क की जामिअ़ मस्जिद में उतरेंगे। मुसलमान फज्र की नमाज़ की सफें बना चुके होंगे, इकामत कही जा चुकी होगी, इमाम महदी जैसे ही मुसल्ले पर पहुंचेंगे उसी वक्त हजरत ईसा (अ०) दो फिरिश्तों के कन्धों पर हाथ रखे हुए पूर्वी मनारे पर उतरेंगे। मुसलमान तुरन्त पहचान लेंगे। मस्जिद में खुशी की लहर दौड़ जाएगी हजरत महदी पलट कर उनको इमामत करने की दअवत देंगे। वह यह कहते हुए इमामत से इन्कार करेंगे कि उम्मते मुस्लिमा अल्लाह के नजदीक एक बुलन्द उम्मत है तुम खुद एक दूसरे के अमीर व इमाम हो। तुम्हारा इमाम ही तुम्हें नमाज पढ़ाए। हजरत महदी फिर इसरार करेंगे, हजरत ईसा उनकी पीठ पर हाथ रखकर इमामत का हुक्म देंगे, चुनान्चे वह इमाम होंगे। हजरत ईसा (अ०) उनके पीछे नमाज अदा करेंगे। यह इस बात की तरफ इशारा होगा कि वह नबी की हैसियत से दुन्या में तशरीफ नहीं लाए हैं बल्कि उन के आने का मक्सद उस वक्त सिर्फ दज्जाल को कत्ल करना है। नमाज से फारिग हो कर दोनों में मुलाकात होगी। मिल्लत की खराब हालत और दज्जाल जैसे विषय पर बातें आएंगी। फिर हजरत ईसा (अ०) के हुक्म से मस्जिद का दरवाजा खोला जाएगा। बाहर दज्जाल होगा उस के साथ सत्तर हजार यहूदी होंगे जिन के पास दो धारी तलवारें होंगी। हजरत महदी की फौज को हमला करने का हुक्म मिलेगा, दोनों लशकर टकराएं गे, दज्जाल हजरत ईसा (अ०) को देखते ही भाग खड़ा होगा, मुसलमान पीछा करेंगे आखिर कार इस्राईल के शहर लुद में उसे पकड़ लिया जायेगा और मसीह अलैहिस्सलाम नेजे के एक ही वार से उस का काम तमाम कर देंगे।

भाईयो ! हजरत ईसा (अ०) और हजरत महदी (रह०) दो अलग–अलग शख्सीयतें हैं। कादियानियों के धोखे से होश्यार रहना।

छठवीं किस्त

सीरतुन्नबी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक़

सय्यिद सुलैमान नदवी

अल्लाह की रज़ा

इस्लाम में हर किस्म की ग़रज व ग़ायत सिर्फ एक ही करार दी गयी है और वह अल्लाह की ख़ुशनूदी और रज़ामन्दी है। एक सच्चे मुसलमान को सिर्फ इसी की खातिर काम करना चाहिए और इस के सिवा कोई दूसरी ग़रज को अपने काम की बुनियाद नहीं बनाना चाहिए, यहीं आकर फल्सफ–ए–अख़लाक और इस्लामी अख़लाक के उसूल का फर्क साफ दिखाई पड़ता है। अख़लाक के ज्ञानी यह ढूंढतें हैं कि इन्सानी अख़लाक की ग़रज व ग़ायत क्या होती है और नबी जो हिकमत के उस्ताद होते हैं यह तालीम (सीख) देते हैं कि इन्सान को अपने अखलाक की गरज व गायत क्या करार देनी चाहिए। इन्सान के पास दो ही दौलतें हैं और इन्हीं दोनों को खुदा की राह में खर्च करना ईसार (त्याग) और हुस्ने अमल है। पहले एक मोमिन की जान जिस के बारे में फरमाया:

"बाज ऐसे हैं जो अपनी जान को खुदा की खुशनूदी चाहने के लिए बेचते हैं और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है।" (सूर : बकर : २०७)

फिर माल के बारे में फरमाया:–

"और उनकी मिसाल जो अपनी दौलत खुदा की खुशनूदी के लिए खर्च करते हैं।" (सूर : बकर : २६५)

"और तुम तो खर्च नहीं करते मगर अल्लाह की ज़ात की चाह कर।" (सूर : बकर : २७२) और जो यह तमाम काम खुदा की खुशनूदी के लिए करेगा तो हम उस को बड़ा बदला देंगे।" (सूर : निसा – ११४)

"और जिन्होंने खुदा के लिये सब्र किया और नमाज खड़ी की और हमने जो उन को दिया है उस में से कुछ छिपे और खुले तरीकः से खर्च किया और बुराई को नेकी से दूर करते हैं। उन्हीं के लिए है पिछला घर।" (सूरः रअद–२२)

"जो अपना माल सफाई और पाकी हासिल करते हुए देता है किसी का उस पर एहसान नहीं है जिस को अदा करने के लिए देता हो बल्कि वह खुदा की ज़ात की तलब के लिए देता है।" (सूर : लैल – १८–२०)

इन आयात की तफसीर आंहजरत सल्ल० ने अनेक हदीसों में फरमाई है। एक सहाबी पूछते हैं "या रसूल अल्लाह! कोई इस लिये लड़ता है कि गनीमत का कुछ माल हाथ आये, कोई इस लिए कि वह बहादुर क़हलाये, कोई इस लिए कि उसे शुहरत हासिल हो तो इन में से राहे खुदा में लड़ना किस को कहेंगे? फरमाया "उस को जो इस लिये लड़ता हो कि खुदा की बात बुलन्द हो।" एक दफा इरशाद फरमाया, "घोड़ा बान्धना किसी के लिए सवाब का सबब, किसी के लिए पर्दापोश, और किसी के लिए गुनाह है। सवाब का सबब उस के लिए है जो खुदा की राह में उस को बान्धता है तो उस के चरने और पानी का भी उस को सवाब मिलता है, पर्दा पोश उस के लिए है जो जरूरतन इस लिए बान्धताहै कि खुदा ने उस को दौलत दी है तो उस को अपनी जरूरत की चीज दूसरों से मांगनी न पड़े तो वह रहम और प्यार के साथ उस से काम लेता है और उस का हक अदा करता है और गुनाह उस के लिए है जो फख्र (गर्व) और नुमाइश के लिए बान्धता है।"

इस तालीम का सब से असरदार बयान वह है जिस को तिरमिजी ने हजरत अबू हुरैरः से नकल किया है और जिस को दुहराते हुए हजरत अबू हुरैरः तीन दफा ग़श खा कर गिरे और जिसको सुनकर हज़रत मावियः ज़ार ज़ार रोये। हज़रत अबू हुरैरः ने क़सम खाकर बयान किया कि आंहज़रत सल्ल० ने फरमाया कि क़ियामत के दिन जब अल्लाह अदालत के लिये उतरेगा और हर उम्मत अपनी जगह घुटने टेकेगी, उस वक्त सब से पहले उनकी पेशी होगी जो कुर्आन के आलिम थे और जिहाद में मारे गये थे और जो दौलत वाले थे। फिर अल्लाह तआला पूछेगा। क्या मैंने तुझ को वह सब नहीं सिखाया जो अपने पैगम्बर पर उतारा था तुम ने उस पर क्या अमल किया? वह अर्ज करेगा बारे इलाहा ! तो मैं रात दिन नमाज़ में कुर्आन पढ़ता था।

खुदा फरमायेगा तू झूठा है। फरिश्ते भी कहेंगे यह झूठा है। फिर खुदा फरमाएगा कि तू तो इसलिये यह करता था ताकि लोग कहें कि तू बड़ा आलिम और कुर्आन पढ़ने वाला है तो दुन्या में तुझ को यह कहा जा चुका (यानी तू अपना बदला पा चुका)। फिर दौलतमन्द से खुदा फरमाएगा क्या मैंने तुझ पर दुन्या को कुशादा नहीं किया यहां तक कि तू किसी का मुहताज नहीं रहा। अर्ज़ करेगा क्यों नहीं ऐ मेरे रब, पूछा जायेगा तो मैं ने जो कुछ तुझ को दिया उसमें तू ने क्या किया? जवाब देगा हकदारों का हक अदा करता था और खैरात देता था। इरशाद होगा तू झूठा है। फरिश्ते कहेंगे यह झूठा है। फिर खुदा फरमायेगा तू तो इसलिए यह करता था कि लोग कहें कि तू बड़ा सखी है। तो यह तुझको दुन्या में कहा जा चुका (तू अपना बदला पा चुका)। इसके बाद वह लाया जायेगा जो जिहाद में मारा गया तो खुदा उससे पूछेगा तू किस बात के लिए मारा गया? कहेगा खुदा या तू ने अपनी राह में जिहाद का हुक्म दिया था तो मैं लड़ा यहां तक कि मारा गया। खुदा फरमायेगा तू झूठा है। फरिश्ते भी कहेंगे यह झूठा है। खुदा कहेगा तू तो इस लिए लड़ा था कि लोग तुझको बहादुर कहें, तो दुन्या में तुझ को यह कहा जा चुका। फिर आंहजरत सल्ल० ने फरमाया यह वह लोग हैं जो सब से पहले जहन्नम में डाले जायेंगे।

हज़रत माविय: इस हदीस को सुन कर बहुत रोये फिर बोले खुदा और उसका रसूल सच्चा है और इस हदीस की ताईद (समर्थन) में कुर्आन पाक की जो आयत पढ़ी उसका तर्जुम: यह है –

"जो कोई दुनिया की जिन्दगी और उस की रौनक चाहता हो तो हम उस का अमल इसी दुनिया में पूरा कर देंगे, बिना कोई कमी किये, इन लोगों का आखिरत में कोई हिस्सा नहीं मगर दोज़ख़। इस दुनिया में उन्होंने जो बनाया वह मिट गया और जो किया वह बर्बाद गया।" (सूर: हूद–१५–१६)

ग़रज़ अगर हमारे अखलाक व आमाल की ग़ायत खुदगर्जी और किसी न किसी तरह का ज़ाती फायदा है तो वह सवाब की रूह से खाली है, और इस्लाम की अखलाकी तालीम इस पस्ती से बहुत बुलन्द है बल्कि एक मक़ाम इस का वह भी है जहां इस की मंजिल रजा–ए–इलाही की तलब नहीं बल्कि खुद अल्लाह की ज़ात हो जाती है।

"और तुम तो खर्च नहीं करते मगर अल्लाह की ज़ात को चाहकर।" (सूर: बकर : २७२)

"और जिन्हों ने अपने परवरदिगार के लिए सब्र किया।" (सूर: रअद–२२)

"और जो किसी के एहसान का बदला उतारने के लिए नही बल्कि अपने बरतर परवरदिगार के लिए करता है।" (सूर: लैल–१८–१६)

अखलाकी अहकाम की तामील और अदा–ए–हुकूक की ताकीद के सिलसिले में इरशाद फरमाया :–

"तो रिश्तेदार का हक अदा करो और गरीब का और मुसाफिर का। ऐसा करना उन लोगों के लिए बेहतर है जो खुदा की जात को चाहते हैं और वही कामयाब हैं।" (सूर: रूम–३८)

मज़ाहिब में अख़लाक का बुनियादी उसूल

आंहज़रत सल्ल० के जरिय: से अख़लाक़ के उसूल की जो तकमील हुई उस का पता अख़लाक के बुनियादी उसूल से चलता है। तौरात ने अपने अख़लाकी तालीमात में शाही अहकाम की शान रखी है जिस में किसी उसूल व ग़रज व ग़ायत और इल्लत (सबब) व मस्लहत की कोई तशरीह (व्याख्या) नहीं की जाती। इन्जील में शब्द–रचना के सिवा इन अख़लाकी अहकाम की कोई दूसरी बुनियाद ही कायम नहीं की गई है ताहम ईसाई मज़हब में कुछ उसूल जरूर मौजूद हैं मगर उनकी बुनियाद हद दर्ज: कमज़ोर है इनमें से पहला मसअला खुद असल खिलकते इन्सानी का है।

सवाल यह है कि इन्सान की हस्ती का सहीफ: अपनी असल खिलकत में सादा है, या गुनाहों से दाग़दार है। ईसाईयत की तालीम यह है कि इन्सान असल में गुनहगार पैदा होता है। गुनाह उसके ख़मीर का पानी है क्यों कि उसके बाप और मां हजरत आदम और हव्व: गुनाहगार थे और यही मौरूसी गुनाह हर इन्सान की फितरत में मुंतकिल (स्थानान्तरित) होता चला आया है। जिस से बचना इन्सान के लिए मुमकिन नहीं। इस मसअल: में मसीही तालीम का गुलू (अत्युक्ति) इस दर्जा बढ़ा हुआ है कि इस के नजदीक हर बच्चा जो पैदा होता है वह जब तक बपतिस्मा (जो ईसाई मजहब की पहली रस्म है, यह एक किस्म का गुस्ल होता है जो ईसाइ मजहब में दाखिल होने के लिए दिया जाता है और इस के बिना किसी इन्सान को ईसाई नहीं कहा जा सकता।) न पा ले पाक नहीं होता। अगर किसी ईसाई का बच्चा भी

इस से पहले मर जाये तो वह गुनाहगार मरा। और आसमानी बादशाह ही के हुदूद (सीमा) में वह दाखिल न होगा बल्कि वह जहन्नम में झोंका जायेगा क्योंकि मसीह के नाम से उस ने नजात (मोक्ष) नहीं पायी थी।

लेकिन इस्लाम का उसूल इस से बिल्कुल जुदा गाना (भिन्न) है इस के नजदीक तौहीद (एकेश्वरवाद) असले फितरत है, खुदा की वह फितरत जिस पर उसने लोगों को पैदा किया। फिर तुम्हारा रब कौन है के अज़ली (अनादि कालीन) सवाल के जवाब में 'बला' यानी खुदा का ऐतराफ (स्वीकारोक्ति) हर इन्सान रोजे अज़ल कर चुका है। इस लिए इस दुनिया में आकर जिस ने अपने फितरी और अजली ऐतराफ के बाद इस का इन्कार नहीं किया उस का वह इकरार व ऐतराफ उस की बेगुनाही के लिए काफी है और इसी लिये अल्लाह तआला ने उसकी लौहेफितरत (स्वभाव पट्टिका) पर जो सुनहरे शब्द लिखे हैं वह अपने होश व तमीज के बाद उन को उभार कर चमका देता है या मिटा डालता है। फरमाया : "हम ने इन्सान को अच्छी रास्ती पर पैदा किया।" (सूरः तीन–४)

यानी हम ने उसकी खिल्कत बेहतरीन तकवीम और रास्ती (धर्मनिष्ठा) पर बनाई है। दूसरी जगह इरशाद हुआः–

"जिस खुदा ने तुझे बनाया फिर तुझ को बराबर किया फिर तुझ को ठीक किया, फिर जिस सूरत में चाहा तुझ को जोड़ दिया।" (सूरः इनफितार–७–८)

यह आयत सूरः इनफितार की है। इसमें कियामत और हश्र व नश्र यानी इन्सान की जज़ा व सज़ा के मुकर्ररः दिन का बयान है। उस के बाद यह आयत है जिस लफज़ का तर्जमः हम ने "ठीक किया।" किया है उस के लफ़्ज़ी मानी "मुअतदिल किया" के हैं यानी उस को ताकत का हर किस्म का ऐतदाल (संयम) बख्शा। नीशापुरी आदि टीकाकारों ने इस का अर्थ यह बताया है कि उसमें कमालात के हुसूल की पूरी क्षमता प्रदान की। इस से साबित हुआ कि ऐतदाल के आम होने में उस के जिस्मानी और रूहानी दोनों ताकत का ऐतदाल दाखिल है। दूसरी आयतों में यह भाव और अधिक स्पष्ट बयान किया गया है। सूरः आला में है :–

"अपने बुलन्द व बरतर रब की पाकी बयान कर जिस ने पैदा किया। फिर बराबर किया और जिस ने हर किस्म का अन्दाजा दुरूस्त किया फिर राह दिखाई।"

सूरः दहर में इससे भी ज्यादा साफ है :–

"हम ने इन्सान को एक बूंद के लच्छे से पैदा किया, पलटते रहे इस को फिर कर दिया इस को सुनता देखता। हम ने उस को राह सुझा दी तो वह या शुक्रगुजार (नेकूकार) होता है या नाशुक्र (बद किरदार)।" गरज़ उसकी यह रहनुमाई और हिदायत पहले ही दिन दे दी गयी, अब समझ आने के बाद खुदा का शुक्रगुजार या नाशुक्र, नेकूकार या बद किरदार, अच्छा या बुरा हो जाना खुद उस का काम है। सूरः शम्स में इस से भी ज्यादा स्पष्ट है :–

"कसम है हर नफस की और उस को ठीक बनाने की फिर हम ने उस को इल्हाम कर दिया (या सुझा दिया)। उस की नेकी और बदी। तो कामयाब हुआ वह जिसने अपने नफस को पाक व साफ रखा, और नाकाम हुआ वह जिस ने इस को मिट्टी में मिल दिया (गन्दा कर दिया)।"

सारांश यह कि अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल. की शिक्षा के अनुसार इन्सानी फितरत (मानव स्वभाव) को पैदाइश के साथ ही गुनाहगार नहीं ठहराया गया है बल्कि उस की असल फितरत में हिदायत और सही इल्हाम दाखिल है। इसीलिए यह कहा गया –

"सो तू बातिल (असत्य) से हटकर अपने आप को दीन पर सीधा काइम रख। वही अल्लाह की फिरत जिस पर उसने लोगों को पैदा किया। खुदा के बनाये में बदलना नहीं। यही सीधा दीन है लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।" (सूरः रूम–३०)

यह दीने फितरत इस्लाम और उसकी तालीमात हैं जिस की बुनियादी चीज तौहीद है। आंजहरत सल्ल. ने इस आयत की तफसीर में फरमाया कि हर बच्चा दीने फितरत पर पैदा होता है फिर उस के मां–बाप उस को यहूदी या नसरानी या मजूसी बना देते हैं। जिस तरह हर जानवर का बच्चा असल में सही व सालिम पैदा होता है, वह कनकटा नहीं पैदा होता इसी तरह इन्सान का बच्चा भी अपनी सही फितरत और स्वालेह खिलकत पर पैदा होता है। वही मुहम्मदी ने इसी बात को एक और आदिकालीन संवाद की सूरत में बयान किया है। इन्सान की मौजूदा जिस्मानी पैदाइश के सिलसिले से पहले अल्लाह ने इन्सानी आत्माओं से पूछा क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नहीं? उन्होंने

एक मत होकर जवाब दिया 'बला'(हां बेशक तू हमारा परवरदिगार है)। यही अनादिकालीन और फितरी ऐतराफ इन्सान का वह अहेद है जिस को कुर्आन ने बार–बार याद दिलाया है और कहा है कि "देखो शैतान ने तुम्हारे बाप आदम को बहकाया था तो तुम इस के बहकाने में न आओ।"

इन तालीमात का लाज़िमी नतीजा यह अकीदा है कि इन्सान अपनी असल फितरत से मासूम और बेदाग़ पैदा होता है। और वह पैदा होने के साथ अपने बाप के मौरूसी गुनाह का पुश्तारः (इतना बोझ जो पीछ पर उठा सकें) अपनी पीठ पर लाद कर नहीं आता कुर्आन का फैसला यह है कि :–

"और एक गुनाह का बोझ दूसरा नहीं उठाता।" (सूरः फातिर–१८)

और इसी की तफसीर में आंहजरत सल्ल० ने फरमाया :

"हां! बाप के जुर्म का बेटा जिम्मेदार नहीं और न बेटे के जुर्म का बाप।"

इसी तरह उन मजहबों ने भी जिन्हों ने इन्सान को आवागवन के चक्कर में फंसा रखा है, इन्सानियत की पैदाइश को एक तरह से गुनहगार और दागदार ही ठहराया गया है। उन्हों ने इन्सानियत की दूसरी पैदाइश का, हर जिन्दगी को दूसरी जिन्दगी का और हर जन्म को दूसरे जन्म का नतीजा बता कर उस को अपने पिछले कर्मों के हाथों में कैद कर रखा है यानी इस से पहले कि वह पैदा हो उस के आमाल का दफतर सियाह हो चुका है।

अब गौर कीजिए कि आंहजरत सल्ल० की यह तालीम कि इन्सान असल फितरत में बेगुनाह और बेदाग़ है, ग़मग़ीन दुनिया के लिए कितनी बड़ी खुशखबरी है। इसी का नतीजा है कि आंहजरत सल्ल० की तालीम इस सरासर जुल्म और बेइन्साफी के अकीदा से पाक है कि मासूम और नाकर्दा (अकृत) गुनाह बच्चा भी गुनाहगार और जहन्नम का ईंधन है। आप की तालमी यह है कि हर बच्चा अपने होश व हवास और अक्ल व तमीज से पहले तक मासूम और बेगुनाह है। फरमाया, "खुदा का कलम बच्चे से उस वक्त के लिए उठा दिया गया जब तक वह अक्ल व तमीज को न पहुंचे।"

धरती की यह इन्सानी कलियां जो बिन खिले मुर्झा गयीं, इस्लाम की निगाह में जन्नत के फूल हैं। आप ने फरमाया कि, "जिस मुसलमान के तीन बच्चे बचपन में मर गये, वह खुदा के दरबार में अपने मां बाप को निजात दिलाने वाले होंगे। और उन को जन्नत में ले जायेंगे।" आंहजरत सल्ल० के दूध पीते बच्चे की जब मौत हुई तो फरमाया, "यह जन्नत में जाकर जन्नती दायों का दूध पियेगा।" इससे ज्यादा यह कि मुशरिकीन के कमसिन बच्चों की निस्बत आप से पूछा गया कि यह बेगुनाह कहां रहेंगे? फरमाया, "खुदा को इल्म है कि यह क्या होते हैं।" लेकिन दूसरे मौके पर इसे स्पष्ट कर दिया। एक दफा सपने मं हजरत इब्राहीम को देखा कि वह जन्नत में बैठे हैं और उनके चारों तरफ कमसिन बच्चों का हुजूम था। फरमाया, "यह वह कमसिन बच्चे थे जो दीने फितरत पर मर गये। सहाबः ने पूछा या रसूलुल्लाह! और मुशरिकों के बच्चे?" फरमाया, "और मुशरिकों के बच्चे भी।" इन साफ बातों का नतीजा यह था कि बाज़ सहाबः कमसिन में मर जाने वाले बच्चे को विशेषकर जन्नती कह उठते थे। लेकिन चूंकि गैब पर हुक्म लगाना सिर्फ खुदा का काम है इस लिए साफ साफ किसी बच्चे के लिए ऐसा कह देना आप ने मुनासिब नहीं समझा। एक दफा एक सहाबी का बच्चा मर गया था। हजरत आयशः ने यह खबर सुनकर आंहजरत सल्ल० से अर्ज की, "या रसूलुल्लाह! इस को मुबारक हो, यह जन्नत की चिड़ियों में से एक चिड़िया थी, न गुनाह किया न गुनाह करने का जमाना पाया।" फरमाया, "ऐ आयशः ! अल्लाह ने जन्नत के लिए कुछ लोग पैदा किये हैं और जहन्नम के लिए कुछ लोग।" एक तरफ ईसाइयत है जो "बपतिस्मा" पाने से पहले मर जाने वाले बच्चों को जहन्नम में झोंकती है, दसूरी तरफ इस्लाम है जो उन के लिये जन्नत का दरवाजा खोलता है। और इन के जनाजः की नमाज में यह दुआ मांगने की तालीम देता है। "खुदावन्द ! इस को मेरे लिए पेशगी का जखीरः बनाना। इस को मेरा ऐसा निजात दिलाने वाला बनाना जिस की शफाअत तेरी बारगाह में मकबूल हो।" हदीसों में ऐसे मौकों पर जब किसी एक नेक अगल से सारे गुनाहों के माफ हो जाने का जिक्र आता है, अकसर आंहजरत सल्ल० ने यह फिकरः इस्तेमाल किया है कि "वह फिर ऐसा मासूम हो जाता है कि गोया उसकी मां ने उस को आज ही जना हो। (जारी)

प्रस्तुतिः एम०हसन अन्सारी

ज़रूरतमन्दों की मदद करना इबादत है।

इक्कीसवीं किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

सुलतान मुराद प्रथम

सुलैमान बाप की जिन्दगी ही में मर चुका था। इस लिए ओवर खान के बाद उस का छोटा बेटा मुराद तख्त पर बैठा अंगूरह के अमीर अलाउद्दीन ने बगावत की लेकिन प्राजित हुआ और अंगूरह पर सुलतान का कब्जा हो गया।

यूरोप में तुर्की सिपहसालार (सेनापति) शाहीन ने अदरना (एडरियानोपुल) फतह कर लिया। सुलतान ने बरूसा को छोड़कर उसे राजधानी बनाया जो कुस्तुनतुनिया की विजय तक बराबर राजधानी रहा। एक और सिपहसालार ने दरदार और गुलचमन पर कब्जा कर लिया। तुर्कों की इन विजयों को देख कर यूरोप के बादशाह घबराए और उन्होंने अपने धार्मिक सरदार पोप से शिकायत की। पोप ने तमाम बादशाहों को खत लिखा। सुलतान मुराद इन दिनों ऐशिया–ए–कोच में लड़ रहा था। शाह सरविया ने इस औसर को बेहतर समझ कर ७६६ हि० में एक बहुत बड़ी फौज के साथ अदरना पर हमला कर दिया। तुर्क बहुत बहादुरी से लड़े। रूमियों की हार हुई और बुरी तरह मारे गये। मुराद ऐशिया–ए–कोचक फतह करके अदराना वापस आया और मुल्क के प्रबन्ध में लग गाया। ७८० हि० में फिर सरविया और बलगारिया दोनों ने मिलकर हमला किया लेकिन सफलता नहीं मिली और हार कर सालाना रिवाज (राजस्व कर) के वादे पर सुलह की। शाह बलगारिया ने अपनी बहेन भी सुलतान को ब्याह दी। ७८२ हि० में फिर उन लोगों ने शरारत की और खिराज की रकम बन्द कर दी। तैमूरताशत की मातहती में फौजें भेजी गयीं जिसने कई शहरों पर कब्जा कर लिया और तीन साल बाद सूफिया में दाखिल हो गया।

कैसरे रूम भी चुपके चुपके शरारत करता रहता था जब कुछ न हो सका तो सुलतान के बेटे सारूजी से बगावत करा दी। सुलतान को मालूम हुआ तो तुरंत पलटा। सुलतान को देख कर फौजों ने सारूजी का साथ छोड़ दिया।

७८८ हि० में शाह बलगारिया ने फिर हमला किया लेकिन फिर पराजित हुआ और उसके शहरों पर सुलतानी फौजों का कब्जा हो गया लेकिन उसकी खुशामद पर कुसूर माफ किया गया। और आधा राज्य भी उस के पास रहने दिया गया। ७९० हि० में शाहसरविया ने हमला किया बड़ी सख्त लड़ाई हुई। आखिर पराजित होकर गिरफतार हुआ और मारा गया। विजय तो हो गयी लेकिन लड़ाई के मैदान में एक सरवी सिपाही ने सुलतान को ऐसा खंजर मारा कि उस की मृत्यु हो गयी। (सन् ७९१)।

सुलतान बायज़ीद प्रथम

सुलतान मुराद के देहान्त के बाद लड़ाई के मैदान में बायजीद की बादशाहत का एलान कर दिया गया। उस का छोटा भाई याकूब चलपी अपनी हिम्मत और बहादुरी की वजह से बादशाहत का दावेदार था। इस लिए उमरा की राय से कत्ल कर दिया गया ताकि बाद में कोई झगड़ा न हो।

शाह सरविया अगरचः सुलतान मुराद प्रथम के जमानें में मारा जा चुका था जिस के बाद सरविया तुर्कों के कब्जे में आ गया था। लेकिन फिर भी सुलतान बायजीद ने दया करके उसके बेटे स्टेफिन को सलतनत दे दी केवल यह वादा ले लिया कि सालाना खिराज देता रहेगा और जब तुर्कों को जरूरत होगी तो फौज की सहायता के लिए हाजिर होगा। स्टेफन ने इसे स्वीकार किया और अपनी बहेन सुलतान के निकाह में दे दी। चूंकि सरविया की लड़ाई में कैसरे रूम भी परदे के पीछे से शरीक था, इस लिए सुलतान बायज़ीद ने ऐशिया–ए–कोचक के रूमी क्षेत्र पर कब्जा कर लिया और कुसतुनतुनिया पर चढ़ाई कर दी। अभी लड़ाई हो रही थी कि खबर आई कि रूमानिया का सूबेदार डयूक अनीस एक बड़े लशकर के साथ राजधानी अदरना की तरफ बढ़ रहा है। बायज़ीद फौरन लौटा। डयूक की पराजय हुई लेकिन सुलतान ने केवल सालाना खिराज के वादे पर मुल्क उसी के पास रहने दिया।

अंगोरा में अलाउद्दीन और दूसरे अमीरों ने बगावत की लेकिन सब की पराजय हुई और सारा इलाका उस मानी सलतनत (तुर्की) में शामिल कर लिया गया।

सन् ७६३ हि० में बलगारियह फतह हो गया जिसे सलतनत में शामिल कर लिय गया। चूंकि बादशाह का बेटा मुसलमान हो गया इसलिए वही सूबेदार मुकर्रर हुआ। इस विजय से हंगरी के बादशाह को खटका पैदा हुआ। उसने पोप से सहायता मांगी। पोप के हुक्म से बहुत से बादशाहों ने लड़ाई की तैयारी की। बरगण्डी, यूवेरिया, आस्ट्रिया, जर्मनी, हंगरी और फलाख लड़ाई में शरीक हुए। मारका बहुत सख्त था लेकिन अल्लाह तआला ने सुलतान को फतह दी। इस फतह पर तमाम इस्लामी देशों में खुशी मनाई गयी और मिस्र के अब्बासी खलीफा मुतवक्किल अलीयुल्लाह ने सारे इलाके में हुकूमत का फरमान भेजा (७६६हि०)।

इस लड़ाई के बाद सुलतान ने आस्ट्रिया और हंगरी पर फौजें भेजीं जिन्हों ने खासा हिस्सा फतह कर लिया। खुद यूनान पर हमला किया और विजय प्राप्त करता हुआ राजधानी एथेंस तक पहुंच गया। यहां से वापस हुआ तो कुसतुनतुनिया के मुसलमानां की तरफ से कैसर के खिलाफ शिकायतें पहुंची। इस लिए उस की ओर ध्यान दिया। करीब था कि कुसतुनतुनिया फतह हो जाए कि इतने में एशिया–ए–कोचक से तैमूर के हमले की खबर आई मजबूरन दस हजार अशरफी सालाना पर सुलह कर ली। यह भी तय पाया कि जो मुसलमान यहां रहते हैं उन के लिए एक अलग शरअी विभाग काइम किया जाएगा जो उनके मुकदमों का फैसला करेगा और उन्हें एक जामा मस्जिद बनाने का हक होगा।

इस के बाद बायजीद ऐशिया–ए–कोचक आया। अंगोरा में तैमूर से मुकाबला हुआ। बायज़ीद बड़ी बहादुरी से लड़ा लेकिन फौज का कुछ भाग तैमूर से मिल गया। इस लिए पराजित हुआ और अपने बेटे मूसा के साथ बन्दी बना लिया गया और गिरिफ्तारी के दूसरे साल ८०५ हि० में उसका देहान्त हो गया।

सुलतान मुहम्मद प्रथम चलपी

बायजदी के बाद उस के बेटों में लड़ाई हुई और आखिर मुहम्मद ने सबको पराजित किया और बादशाह बन गया। तैमूर के हमले और फिर आपस के झगड़ों की वजह से देश में अबतरी (खराबी) फैल गई थी जिस के कारण जगह जगह नयी नयी रियासतें काइम हो गयीं। सुलतान मुहम्मद की सारी जिन्दगी उन्हीं से लड़ते गुजरी। आखिर बड़ी मुश्किल से यह लोग काबू में आए।

इसी जमाने में एक शख्स बदरूद्दीन ने एक नया धर्म निकाला और अपने मुरीद पीर कलीचा के साथ मिलकर बड़ी हड़बोंग मचाई। उन की इन शरारतों से आजिज आकर सुलतान ने उस तरफ ध्यान दिया। बड़ी कठिनाई से यह लोग गिरिफ्तार हुए और कत्ल कर दिये गये। इन घटनाओं के बाद जरा इतमिनान हुआ तो सुलतान ने देश का प्रबन्ध ठीक करना शुरू किया लेकिन अभी इसी में लगा हुआ था कि सन् ८२४ हि० में उस का देहान्त हो गया।

सुलतान मुहम्मद बड़ा इल्म दोस्त और शरीअत का पाबन्द था। उस ने हरमैन शरीफैन (मक्का मदीना) के लिए सालाना रकम मुकर्रर की जो बाद में भी जारी रही।

सुलतान मुराद द्वितीय

बाप की वसीयत के अनुसार सुलतान मुराद सिंघासन पर बैठा। यह शुरू में लड़ाई झगड़े से बचना चाहता था ताकि देश का प्रबन्ध ठीक हो जाए लेकिन कैसर ने कमजोर समझ कर धमकियां देनी शुरू कीं और जब उस का असर न हुआ तो खुल्लम खुल्ला लड़ाई शुरू कर दी। सुलतान को इस हरकत पर सख्त क्रोध आया और कैसर पर चढ़ाई कर दी लेकिन इतने में खबर मिली कि ऐशिया–ए–कोचक में उसके भाई मुस्तफा चिलयी ने बगावत कर दी है। इस लिए तुरन्त उस तरफ रवाना हुआ। मुस्तफा गिरिफतार हो कर कत्ल हुआ और उस की सहायता करने वालों को कड़ी सजाएं मिलीं। इस के बाद करीब की दूसरी रियासतों पर कब्जा किया फिर यूरोप की तरफ बढ़ा। हंगरीने आधे देश और सरविया ने पचास हजार सालाना खिराज के वादे पर सुलह की। इसके बाद सलानीक और अलबानिया पर कब्जा किया। फलाख के सरदार डारगून ने हंगरी के बादशाह के इशारे से अलबानिया के सरदार को साथ लेकर बगावत कर दी। मुराद ने तुरंत पराजित किया और उसके साथ हंगरी को भी मिजाज दुरूस्त कर दिये। सन् ८४१ हि० में सरविया ने बगावत कर दी। सुलतान ने इस बार भी पराजित और समुन्दरिया फतह करके राजधानी बलगराद के निकट तक पहुंच गया। सराविया के बादशाह ने भाग

कर हंगरी में पनाह ली। मुराद ने ट्रांसलोनिया की तरफ फौज भेजी। होनियाड हंगेरवी फौज का सरदार था। लड़ाई बहुत सख्त हुई। बीस हजार तुर्क मारे गये, बाकी भाग गये। मुराद ने फिर अस्सी हजार फौज भेजी लेकिन उसे भी पराजय का मुंह देखना पड़ा। अब होनियाड का नाम सारे यूरोप में मशहूर हो गया। पोप ने सलीबी जंग (ईसाइयों का जिहाद) का एलान कर दिया और हंगरी के अतिरिक्त प्रोशिया, पोलैण्ड और सरविया की फौजों ने मिलकर मुसलमानों से मुकाबला किया। सुलतान की पराजय हुई। उधर एशिया–ए–कोचक में भी बगावत हो गयी। मजबूरन सुलतान ने फलाख छोड़ दिया। सरविया के इलाके वापस कर दिये और हंगरी से दस साल तक न लड़ने का वादा किया। उसी जमाने में सुलतान के बड़े बेटे अलाउद्दीन का देहान्त हो गया। इन सब बातों का ऐसा असर हुआ कि सुलतान मुराद ने सलतनत छोड़ कर अपने बेटे को तख्त पर बैठा दिया।

अब ईसाई और भी शेर हो गये सन् ८४६ हि० में सुलहनामे के खिलाफ हंगरी के बादशाह ने तुर्की रियासत बलगारिया पर हमला कर दिया। मजबूरन फिर सुलतान मुराद को मैदान में आना पड़ा। अदरना के स्थान पर मुकाबला हुआ। ईसाईयों की भारी पराजय हुई। खुद होनियाड से भी कुछ न हो सका और भागते ही बनी। इस के बाद मुहम्मद को फिर तख्त पर बैठाया लेकिन इनकशारी फौज (नौमुस्लिम ईसाइयों की फौज) की बगावत की वजह से फिर इंतिजाम हाथ में लेना पड़ा। जब यह काबू में आ गयी तो यूनान पर चढ़ाई की। इतने अर्से में होनियाड बहुत बड़ा लशकर जमा कर के फिर आ गया। सुलतान भी मुकाबले पर आया। बड़ी सख्त लड़ाई हुई जिस में सुलतान को फतह हुई। इस के बाद अलबानिया पर उस की शरात का मजा चखाने के लिए हमला किया और सालाना लगान के वादे पर सुलह की। इस के बाद अदरना वापस आया जहां सन् ८५५में वफात पाई। (जारी)

अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

(पृष्ठ ४ का शेष)

लिख तो इस लिए रहा हूं कि उन की हालत पर तरस आ रहा है बल्कि रोना आ रहा है। सोचने की बात है अगर हम को ख़बर दी जाए कि आपके फ़ुलां अज़ीज़ या दोस्त को डाकुओं ने या फ़सादियों ने दहकती आग में डाल दिया। सोचिये आप पर क्या असर पड़ेगा? तो जब यह मअ्लूम है कि फुलां बूढ़ा या फुलां जवान ऐसे काम कर रहा है जिस पर यहां की आग से सत्तर गुना तेज़ आग में डाला जाएगा तो हम को या आप को यह कैसे बर्दाश्त होगा। जिन को अल्लाह ने महफ़ूज़ रखा है और इन बातों का इल्म दिया है उन को बेचैन हो जाना चाहिए। अव्वलन ख़ुद समझा बुझा कर सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश करना चाहिए अगर ख़ुद से फ़ाइदा न पहुंचा पा रहा हो तो किसी आलिम बुज़ुर्ग से मदद लेना चाहिए। मिज़ाज का अन्दाज़ा लगाते हुए किसी दीनी जमाअ़त से जोड़ने की कोशिश चाहिए बहर हाल अल्लाह ने जिसे समझ दी है उस को अपने साथ दूसरों की भी फ़िक्र करना चाहिए।

(पृष्ठ १६ का शेष)

पर पूंजीवाद का सारा ढांचा खड़ा होता है, इस्लाम इन दोनों का कड़ा विरोधी है।

कम्यूनिज्म का उन्मूलन : इस प्रकार माद्दा परस्त (भौतिकवादी) और बेखुदा बामवाद का उन्मूलन भी केवल इस्लाम के हाथों सम्भव है क्योंकि वह न केवल समाजी इंसाफ काइम करता है और उसे बरकरार रखता है बल्कि उच्च इंसानी मूल्यों और रूहानी कद्रों की हिफाजत भी करता है। इस्लाम अपनी बात किसी जोर जबरदस्ती से नहीं मनवाता क्योंकि आस्था और धर्म के मामले में वह किसी से सख्ती का सिरे से क़ायल ही नहीं है। इस सिलसिले में उस का सिद्धान्त यह है कि –

अनुवाद "दीन के मामले में कोई ज़ोरज़बरदस्ती नहीं है, सही बात गलत विचारों से अलग छांट कर रख दी गई है।" (पवित्र कुर्आन – २५६–२)

तात्पर्य यह है कि इस्लाम का युग समाप्त नहीं हो चुका है। वास्तव में अब शुरू हुआ है। यह कोई बेजान सिद्धान्त नहीं है बल्कि यह एक इन्क़लाबी जीवन शैली है। इस का भविष्य उतना ही रौशन है जितना उस का भूतकाल शानदार है। जब सारी दुन्या इस के प्रकाश से जगमगा उठी थी और यूरोप अभी इतिहास के अन्धेरे गारों में टामक टुयां मार रहा था।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी

लिखने वालों से अनुरोध है कि सरल भाषा में तथा सरल शैली में अपनी लाभदायक बातें पाठकों तक पहुंचाएं। धन्यवाद! (सम्पादक)

आखिरी किस्त

क्या अब इस्लाम की आवश्यकता नहीं रही?

मु० कुत्ब

नेकी और भलाई का मार्ग :

आज के संसार की यह तस्वीर बहुत ही अन्धकारपूर्ण है परन्तु निजात (मुक्ति) की एक राह अब भी बाकी है और वह है इस्लाम की राह। जिस प्रकार तेरह शताब्दी पहले इस्लाम ने इन्सान को वासनाओं और हैवानी (पाशविक) इच्छाओं से आजादी दिलाई थी, उसी तरह आज भी वही मानवता की सहायता कर सकता है और उस को काम वासनाओं से छुटकारा देकर उस को इस योग्य बना सकता है कि वह अपनी आत्मा (रूहानी) स्तर को उच्चतर करने में अपने दिल व दिमाग की तमाम शक्तियां लगा दे ताकि जीवन का दामन नेकियों और भलाईयों से भर जाए और हर तरफ उन्हीं का चर्चा हो।

इस्लाम के पुनरुत्थान की संभावनाएं

सम्भव है यह बातें सुनकर बाज लोग कह उठें कि इस्लाम का पुनरुत्थान अब एक कठिन कार्य है और इसके लिए कोशिश बेकार है। मगर इन लोगों को मालूम होना चाहिए कि जिस प्रकार पहले इस्लामी व्यवस्था की व्यवहारिकता साबित हो चुकी है कि मानव जगत इसकी रहनुमाई में काम वासनाओं को प्रास्त कर सकता है, उसी प्रकार इस ऐतिहासिक वास्तविकता की पुनरावृत्ति सम्भव है क्योंकि इंसानी स्वभाव में बुनियादी तौर पर कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यह जैसा पहले था वैसा भी ज्यों का त्यों है। इस्लाम जब आया था तो संसार की अखलाकी (नैतिक) और दीनी हालत वैसी ही पस्त और गिरी हुई थी जैसी कि इस समय नज़र आती है। प्राचीन रूमी नैतिक आचरण और काम वासनाओं का उसी तरह शिकार थे जिस प्रकार आज कल के वामपंथी देश इन का शिकार हैं। यही वह ऐतिहासिक पृष्ठिभूमि है जिस में इस्लाम दुन्या में आया। उस ने आते ही अपने प्रभावाधीन (जेरे असर) दुन्या की अखलाकी हालत में इनकलाब पैदा कर दिया। इसको न्यूनतम स्तर से उठाया और उच्चतर उद्देश्य से परिचित कराया, नेकी और सत्य के मार्ग में जिहाद का जज़्बा जगाया और इंसानियत की उन्नति और खुशहाली से दोचार किया। उस ने एक ऐसे रूहानी आन्दोलन को जन्म दिया जो एक लम्बे समय तक पूर्वी व पश्चिमी दुन्या पर छाया रहा क्योंकि इस्लाम अख़लाकी बेराहरवी (नैतिक पतन) यौन सम्बन्धी उत्तेजनाओं और नास्तिकता (इलहाद) की इजाज़त नहीं देता और न उन्हें उभरने का अवसर देता है। अतएव हम देखते हैं कि उस अवध में नेकी, शराफत और इंसानी प्रयासों में मुसलमानों ने संसार की तमाम कौमों का मार्गदर्शन किया और उनकी जिन्दगी दूसरों के लिए नमूने की जिन्दगी बन गई। मगर उस के बाद वह धीरे धीरे इस्लाम के सिद्धान्तों से दूर होते गए यहां तक कि उनकी जिन्दगियों में उसके उच्च उद्देश्य और सिद्धान्त को कोई झलक बाकी न रही और वह काम वास्नाओं और जज़्बात के गुलाम बन गए। इस जुर्म की सजा में खुदा के अटल क़ानून के अनुसार अन्ततः इसी दुन्या में सज़ा भी मिल गई और उनकी महानता व शानोशौकत का सूर्य अस्त होगा।

एक पूर्ण जीवनशैली

परन्तु इस का यह अर्थ नहीं कि इस्लाम केवल एक रूहानी अकीदा (विश्वास) है या केवल अखलाकी व्यवस्था है या जमीन व आसमान के बारे में महज एक इलमी खोज का नाम है। नहीं इस्लाम जिन्दगी की एक व्यवहारिक व्यवस्था है और इसका कोई पहलू इसकी पकड़ से आजाद नहीं। वह इन्सानी जिन्दगी के तमाम सम्बन्धों, सम्पर्कों को संगठित करता है चाहे यह राजनैतिक, आर्थिक हों या सामाजिक, उन के लिए उचित नियम व कानून बनाकर उन्हें अमलन लागू करता है।

इस्लामी व्यवस्था (निजाम) की बाज़ प्रमुख विशेषताओं की झलकियां प्रस्तुत हैं–

इस्लाम की पहली विशेषता :

पहली बात तो इस्लाम के सम्बन्ध में यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि यह खाली खूली सिद्धांत नहीं है यह एक व्यवहारिक जीवन शैली है जो केवल इंसानी जिन्दगी की किसी जरूरत की उपेक्षा नहीं करती बल्कि इसकी प्राप्ति का मार्ग भी खोलती है।

इस्लाम की दूसररी विशेषता :

दूसरे यह कि इंसान की असली

जरूरतें जिन्दगी जुटाने के लिए इस्लाम जिन्दगी में इंसाफ और सन्तुलन को काइम करना चाहता है मगर इंसानी स्वभाव की सीमाओं को वह नजर से ओझल नहीं होने देता। वह अपने सुधार का प्रारम्भ "व्यक्ति" से करता है और उसके जीवन में शरीर और आत्मा और अक्ल और इच्छाओं के विभिन्न तकाजों के दर्मियान सन्तुलन पैदा करता है ताकि इनमें से कोई अपनी सीमाओं से आगे न बढ़ने पाए। उच्चतम रूहानी दर्जों की प्राप्ति के लिए इस्लाम न तो हैवानी (पाशविक) स्वभाव को दबाता है और न लज्जत परस्ती में इन्सान के लिप्त होने को प्रशंसा की दृष्टि से देखता है जिस की वजह से इंसान बिल्कुल पशु बनकर रह जाए। इस्लाम आत्मा और शरीर पर बुलन्द मुकाम से निगाह डालता है। और इनमें संतुलन पैदा करता है और उनकी उचित मांगों को पूरा करता है। इस प्रकार जब इंसानी जिन्दगी स्वस्थ बुनियादों पर सुदृढ़ हो चुकती है तो इस्लाम व्यक्ति और समाज के बीच सामंजस्य पैदा करने की तरफ ध्यान देता है। अतएव यह किसी व्यक्ति को किसी दूसरे व्यक्ति या समाज के खिलाफ किसी जियादती के करने की इजाजत नहीं देता और न समाज के इस बात का अधिकार देता है कि किसी व्यक्ति के साथ अन्याय करे। इस्लाम इस बात की भी अनुमत नहीं देता कि इंसान का कोई वर्ग या कौम दूसरे वर्ग या कौमों पर अपनी खुदाई का सिक्का चलाए। तात्पर्य यह कि इस्लाम समाजी जिन्दगी में विरोधी शक्तियों की लगाम अपने हाथ में रखता है। उन्हें आपस में टकराने से बचाता है और उन में संतुलन पैदा करके उन्हें इस प्रकार तरतीब देता है कि यह मिल जुलकर इंसान और इंसानियत के उच्चतर लाभ के लिए काम कर सकें।

समाजी शक्तियों में संतुलन :

इसी के साथ ही इस्लाम रूहानी और माद्दी (भौतिक) और आर्थिक और इंसानी ताकतों में भी संतुलन स्थापित करने की प्रेरणा को उभारता है। इस्लाम जिन्दगी में इंसानी तत्वों (अवामिल) पर आर्थिक तत्वों के फैसलाकुन बरतरी और श्रेष्टता का काइल नहीं मगर रूहानियत या सैद्धान्तिक लोगों (नजरियापरस्तों) के इस विचार से भी सहमत नहीं है कि इंसानी जिन्दगी का प्रबन्ध केवल रूहानी या उच्च विचारों और उच्च दृष्टिकोणों के बल पर किया जा सकता है क्योंकि इस्लाम समाज के केवल एक पक्ष या कुछ पक्षों पर बल नहीं देता बल्कि सभी पक्षों अर्थात रूहानी और आर्थिक व सामाजिक तमाम पक्षों पर बल देता है।

इस्लाम की तीसरी विशेषता :

तीसरी बात यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि बहैसियत एक सामाजिक दृष्टिकोण और आर्थिक व्यवस्था के इस्लाम अपनी एक स्थाई और अलग शान रखता है। कुछ गैर अहम समस्याओं और व्याख्याओं में कुछ समानताओं के बावजूद यह न कम्यूनिज्म से कोई सम्बन्ध रखता है और न पूंजीवादी व्यवस्था से। इस में दोनों व्यवस्थाओं की खूबियां मौजूद हैं लेकिन उनकी कमजोरियों और कमियों से इस का दामन पाक है। यह न तो व्यक्ति को वर्तमान पश्चिमी देशों की तरह हद से ज्यादा महत्व देता है कि समाज इस के मुकाबले में बेबस होकर रह जाए और किसी हाल में भी व्यक्ति की पकड़ हो न सके कहीं उसकी आजादी पामाल (पद दलित) न हो जाए। व्यक्ति कि यही हद से बढ़ी हुई आजादी वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था की बुनियाद है और उसे खुली छूट देती है कि वह दूसरे व्यक्तियों यहां तक कि स्वयं समाज के लिए, जिस ने उसे परवान चढ़ाया और उसे वैयक्तिकता प्रदान की, खतरा और मुसीबत बन जाए। दूसरी तरफ इस्लाम समाजी जिन्दगी पर बहस करते हुए समाज की अहमियत का सीमोल्लंघन (की मरहर पार) नहीं करता जैसा कि पूर्वी यूरोप की बामपंथी हुकूमतें करती हैं। इन हुकूमतों में महत्व समुदाय या समाज को प्राप्त है। व्यक्ति को उस के मुकाबले में कोई अहमियत या महत्व नहीं और न समाज से अलग उस की हस्ती की कल्पना की जा सकती है। फलस्वरूप इन देशों में शक्ति और आजादी का उदगम (आगाज) समुदाय या समाज है। व्यक्ति को न यह अधिकार हासिल है कि वह समाज की अधिकारिता (बालादस्ती) को चुनौती देसके और न उस को अपनी मांगों के हक में मुंह खोलने की इजाजत है। इसी दृष्टिकोण की कोख से कम्यूनिज्म ने जन्म लिया जिस का दावा है कि व्यक्ति की किस्मत की मालिक तनहा रियासत (राज्य) है जिस को अपने नागरिकों पर असीमित और पूर्ण अधिकार प्राप्त हैं कि उन्हें जिस सांचे में चाहे ढाले।

समाजी व्यवस्था की बुनियाद:

बामपंथी और पूंजी वाद व्यवस्था के इन दो चरम सीमाआं को छोड़ कर इस्लाम बीच की राह अपनाता है। यह व्यक्ति और समाज दोनों को एक समान

महत्व देता है और इन में इस प्रकार संतुलन स्थापित करता है कि व्यक्ति को अपनी क्षमता बढ़ाने और उन्हें परवान चढ़ाने के लिए जरूरी आजादी हासिल रहती है परन्तु इस की अनुमत नहीं होती कि वह दूसरे लोगों के साथ अन्याय करे उन पर अत्याचार या जियादती करे। दूसरी तरफ इस्लाम समाज को राज्य के सामाजिक और आर्थिक प्रबन्ध के सिलसिले में व्यापक अधिकार देता है ताकि इंसान की जिन्दगी में सन्तुलन व सामंजस बरकरार रखा जा सके।

इस्लाम की यह एकाकी जीवनशैली (मुनफरद निजामे जिन्दगी) आर्थिक क्रियाकलापों या हालात का नतीजा नहीं और न इसका वजूद विभिन्न वर्गों के स्वार्थों में टकराव से पैदा हुई है बल्कि यह एक इलहामी (ईश्वरीय) जीवनशैली है जो एक ऐसे युग में इंसानों को मिली थी जब उस की जिन्दगी में न तो आर्थिक तत्वों को कोई विशेष महत्व हासिल था और न वह आर्थिक न्याय के वर्तमान अर्थ से परिचित था। आर्थिक जीवन के सुधार की नजर से देखा जाये तो इस्लाम के मुकाबले में कम्यूनिज्म और पूंजीवाद दोनों बहुत बाद की पैदावार हैं लिहाजा इस्लाम को इन दोनों के मुकाबले में प्राथमिकता का दर्जा प्राप्त है।

बुनियादी जरूरियाते जिन्दगी:—

मिसाल के तौर पर इंसान की बुनियादी जरूरियाते जिन्दगी का ही प्रश्न है। आमतौर पर कहा जाता है कि कार्लमार्क्स पहला इंसान था जिस ने भोजन, मकान और जिन्सी आसूदगी (यौन सम्बन्धी संतुष्टि) को बुनियादी जरूरत बरकरार रखते हुए हुकूमत पर जरूरी करार दिया है कि वह अपनी तमाम प्रजा के लिए इन आवश्यकताओं की पूर्ति करे। कार्लमार्क्स के इस एलान को इंसानी विचारों में बड़ा इन्कलाबी कारनामा करार दिया जाता है। मगर वास्तविकता यह है कि कार्लमार्क्स के पैदा होने के तेरह सदी पूर्व इस्लाम द्वारा दुन्या इस इन्क्लाबी एलान से भली भांति परिचित हो चुकी थी। अतएव इस सिलसिले में पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है कि आप (सल्ल०) ने फरमाया "जो व्यक्ति हमारे (अर्थात इस्लामी रियासत) कर्मचारी की हैसियत से सेवा कर रहा है और बीवी से वंचित है, उसकी शादी कराई जाएगी, अगर उसके पास मकान नहीं तो रहने के लिए मकान दिया जाएगा, अगर सेवक नहीं तो उसे सेवक प्राप्त कराया जाएगा, अगर उसके पास सवारी नहीं तो सवारी का बन्दोबस्त किया जाएगा।" आप (सल्ल०) के इस ऐतिहासिक ऐलान में वह तमाम बुनियादी अधिकार मौजूद हैं जिन का एलान बाद में कार्लमार्क्स ने किया बल्कि बहुत कुछ और भी शमिल है मगर कम्यूनिज्म की तरह इस्लाम इन की कीमत वर्ग भेद, खूनी इन्कलाब और उन तमाम उच्च जीवन मूल्यों को नकार कर वसूल नहीं करता जो भोजन मकान और यौन परस्ती, के तंग दाएरे में किसी हाल में कैद नहीं की जा सकती।

इस्लाम की जीवन शैली की यह प्रमुख विशेषताएं हैं। इस का कोई क्षेत्र, चाहे जज्बात की दुन्या से सम्बन्ध रखता हो या विचारों, कर्मों, उपासनाओं, आर्थिक मामिलों, सामाजिक सम्बन्ध, स्वाभाविक प्रेरकों से, उस की पकड़ से आजाद नहीं रहता। आज भी इस्लम सही दुन्या को नफरतों के इस दलदल से निकाल सकता है क्योंकि इस्लाम इंसानी बराबरी का एक सही विचार पेश करके नहीं रह जाता बल्कि अमल की दुन्या में भी वह ऐसी बराबरी काइम करके दिखा चुका है जिस की इतिहास में कोई मिसाल नहीं मिलती इस्लाम की इस मिसाली युग में किसी काले को गोरे पर रंग या वंशज (नस्ल) के आधारपर कोई श्रेष्टता प्राप्त नहीं थी इस के यहां श्रेष्ठता और बरतरी का आधार केवल इंसान की नेकी और खुदा का डर था।

आज की दुन्या एक और पहलू से भी इस्लाम की जरूरत से बेनियाज (लालसा रहित) नहीं हो सकती। अत्याचार व जुल्म के हाथों आज इंसानियत जिस उत्पीड़न व दुखदर्द से घिरी हुई है और जिस बरबरता तथा हिंसा की शिकार है, उन से बचने की कोई और राह सिवाए इस्लाम के नजर नहीं आती। इस्लाम इंसानियत को जुल्म व अत्याचार और बरबरता से छुटकारा दिला सकता है क्योंकि यह सामराजी लूट घसोट का शदीद मुखालिफ है। इस सन्दर्भ में हजरत उमर बिन खत्ताब के मशहूर अदालती फैसले की मिसाल पेश की जा सकती है जिसमें एक क़ब्ती को अकारण मारने और सताने पर आप ने मिस्र के नामवर विजयता को सजा दी थी।

पूंजीवाद की लानत :

इस समय पूंजीवादी व्यवस्था की जो लानत दुन्या पर मुसल्लत है उस से छुटकारे की राह भी इस्लाम के सिवा कोई नहीं है। सूद खोरी और पूंजी की जमाखोरी जिन की बुनियाद

(शेष पृष्ठ १६ पर)

खुशगवार भविष्य की राह आसान बनाई जाए

डॉ० मसऊदुल हसन उसमानी
जनरल सेक्रेट्री दीनी तालीमी कौंसिल उ०प्र०

दीनी तालीमी कौंसिल की स्थापना के ही समय से यह ज़ेहन भी काम कर रहा था कि मुल्क में तालीम की राह से प्रजातंत्र, सेकूलरिज़्म, संविधान की महानता कौमों के दरमियान मजहब, भाषा और सभ्यता व कलचर में विभिन्नता के बावजूद आपसी प्रेम और वफादारी के जज़्बात को बढ़ावा देने की कोशिश की जाएगी। यह एक प्रकार की बेमिसाल प्रतिज्ञा थी जो देश प्रेम के जज़्बे से भरपूर होकर की गई थी। इस्लाम के महान विचारक स्वर्गीय मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी चालीस वर्षों तक इसके अध्यक्ष की हैसियत से पूरे देश को इस नाजुकतरीन समस्या की तरफ ध्यान आकृष्ट करते रहे कि दिलों को जोड़ने और देश की पेशानी को रौशन रखने के लिए जरूरी है कि पाठ्यक्रम और शिक्षा व्यवस्था की बुनियादों को सही तौर पर काइम रखा जाए। पाठ्य पुस्तकों में किसी खास विचारधारा और धार्मिक तत्वों को शामिल न किया जाए। इसे देवमाला के विकास व प्रचार का माध्यम न बनाया जाए। मुसलमान और इस्लाम के ख़िलाफ़ पाठों को शामिल करने से वातावरण व माहौल को साम्प्रदायिकता से प्रदूषित न किया जाए। लेकिन शुरू से ऐसा महसूस होता है कि केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों ने यह तय कर लिया था कि पाठ्य पुस्तकों को फ़िरक़ावाराना जहर से भर दिया जाए। इस पर अमल भी किया गया और सच यह है कि आज तक सरकारी पाठ्य पुस्तकों में मुसलमानों के दृष्टिकोण (नुक्त–ए–नज़र) से बल्कि भारत के संविधान में दिये गये अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रोशनी में और सेकल्यूरिज़्म के सकारात्मक कल्पना की मौजूदगी में यह मसला न केवल बरकरार है बल्कि अक्सर इसमें तेजी आती रहती है। ३० दिसम्बर सन् १९५६ को दीनी तालीमी कौंसिल की स्थापना के समय इस्लाम के महानविचारक मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी ने फ़रमाया था "एक ऐसी मिल्लत (समुदाय) को जिसकी जिन्दगी इतने उच्च स्तर पर हो एक ऐसे पाठ्यक्रम और शिक्षा व्यवस्था के हवाले नहीं किया जा सकता।"

मुजाहिदे मिल्लत मौलाना हिफ़्जुर्रहमान सेवहारवी ने मेम्बर पार्लियामेंट की हैसियत से मार्च १९६० में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री को सम्बोधित करते हुए पार्लियामेंट के अन्दर अपने पुरजोर जोश और तर्कसंगत भाषण में फ़रमाया था –

"कांस्टीट्यूशन बनाने के बाद यह बात साफ कर दी गयी है कि जहां तक तालीम का तालुक है गवर्नमेंट सिर्फ सेकल्यूरिज़्म और नेशनलिज़्म के मुताबिक किताबों के कोर्स को अपने अन्दर जज़्ब करेगी किसी के मजहब और किसी के धर्म की तालीम की ज़िम्मेदारी हुकूमत पर नहीं है। यह बात हमने बहुत मुफीद (लाभकारी) समझी और यह सही क़द्र (मूल्य) है जो यकीनन तालीम के सिलसिले में सेकुलर स्टेट में होना चाहिए।

अगरचः यह देश सेकुलर स्टेट है और बजातौर पर इस पर गर्व (फ़ख्र) है तो हर चीज को सेकुलर होना चाहिए और तालीम के अन्दर जो सब से अधिक महत्व की चीज़ है अगर एक खास मज़हब या धर्म का प्रोपगण्डा हो और दूसरे धर्म की तौहीन हो तो यह चीज नाकाबिले बर्दाश्त है।"

इकबाल ने कहा था –

हम समझते थे लाएगी फ़रागत तालीम।
क्या खबर थी चला आएगा इलहाद भी साथ।।

असल मसला यही था आजाद हिन्दुस्तान में सेकुलरिज़्म पर एक बड़ा हमला था कि तालीम जैसे अवामी विषय को भी हिन्दू देवमाला के विचारों से भर दिया गया और दुर्भाग्य यह है कि लगभग आधी सदी गुजर जाने के बाद भी हुकूमतें अपने इसी विचारधारा पर काइम हैं। इस में सेकुलर और ग़ैर सेकुलर शासन व्यवस्था में कोई अन्तर नहीं है और सियासीतौर पर बदले हुए हालात में कोई अन्तर भी महसूस नहीं होता। उत्तर प्रदेश में यह समस्या अधिक गम्भीर है।

दीनीतालीमी कौंसिल ने अपने हमागीर (सार्वजनिक) तालीमी तहरीक व तनजीम में इस बुनियादी समस्या को न केवल वरीयता (तरजीह) दी बल्कि हुकूमतों के सहायता प्राप्त गैर सहायता प्राप्त तथा राजकीय विद्यालयों

में पढ़ाई जाने वाली सरकारी पाठ्य पुस्तकों की समीक्षा करके (जाइज़ा लेकर) गम्भीरता के साथ पूरे देश के सामने इस खतरनाक सूरतहाल का नक्शा पेश कर दिया।

इस प्रकार की पहली समीक्षा जुलाई १९६६ में "यू०पी० के सरकारी निसाबी तालीम का मुख़्तसर जाइज़ा" के नाम से प्रकाशित किया गया।

दूसरा जाइजा (समीक्षा) "यू०पी० सरकारी पाठ्य पुस्तकों का राष्ट्रीय एकीकरण के दृष्टिकोण (कौमीएकजेहती के नुक्त–ए–नज़र) से सीमक्षा के नाम से १९९३ में तैयार करके पेश किया गया।

अनुमान था कि इसके बाद कोई नुमाया तबदीली जरूर आएगी। यह जाइजे सरकारी पाठ्य पुस्तकों के सिलसिले में एक अहम दस्तावेज़ की हैसियत रखते थे बल्कि ऐसे आइने थे जिसमें फिरकावारियत का चित्र साफ नजर आता है। मुसलमानों को इतमीनान दिलाने के लिए वक्ती तौर पर शिक्षा विभाग की तरफ से कुछ सकारात्मक फैसले जरूर हुए। बीजेपी के शासन काल में कल्प योजना की पूरी स्कीम निरस्त करनी पड़ी लेकिन उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग ने जैसे कसम खा रखी है कि वह अपनी पुस्तकों को इन खामियों से पूरी तरह पाक व साफ नहीं करेगा। शोर मचाया जाएगा तो कुछ तबदीली कर दी जाएगी। पूरी तौर पर इस सिलसिले को समाप्त नहीं किया जाएगा। हुकूमतें इस विचार धारा के आगे बेबस नज़र आती हैं या पर्दे की पीछे शायद उनकी सहमत भी प्राप्त है।

दीनी तालीमी कौंसिल ने पिछले वर्ष २००५ में सरकारी पाठ्य पुस्तकों में इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ पाठ्य सामग्री को चिन्हित (निशान देही) करते हुए एक तीसरी समीक्षा प्रकाशित की जिस का बड़े पैमाने पर एक सभा आयोजित कर विमोचन किया गया। इस अवसर पर "तालीम और सेकुलरिज़्म के विषय पर एक बड़ा सेमिनार मौलाना सैयद राबे हसनी नदवी साहब की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस समीक्षा की मीडिया द्वारा बेपनाह पब्लीसिटी हुई। पहली बार समाचार पत्रों और न्यूज चैनल में इस मसले को पूरी गम्भीरता और अहमियत के साथ पेश किया गया और पहली बार यह विश्वास भी प्राप्त हुआ कि हमारी मीडिया में जिम्मेदारी का एहसास बाकी है। इस प्लेटफार्म से शिक्षा के इस नकारात्मक रूजहान को बहुत सकारात्मक अन्दाज से पेश करके पूरे देश को गोया चौंका दिया गया।

दीनीतालीमकी कौंसिल की यह एक मुखलिसाना कोशिश थी। सच्चर कमीशन ने भी इस मामले की अहमियत को पूरी तरह महसूस किया और उसकी फिक्र उत्तर प्रदेश हुकूमत को जगाने का जरिया बनी। शिक्षा विभाग के अधिकारियों से बात करने का अवसर मिला। बड़े स्तर की मीटिंगें हुईं। हर स्तर पर अफसरान बचाव की पोजीशन में नजर आए और उन्हें अन्दाजा भी हुआ कि उनके सामने जो बातचीत हो रही है भारत के संविधान (दस्तूरेहिन्द) की अज़मत (वैभव) को बाकी रखने के जज़्बे से हो रही है।

एक बुनियादी मांग यह की गयी थी कि अगले शिक्षा सत्र से पुस्तकों की गलतियां ठीक कर दी जाएं और एक स्थाई समीक्षा कमेटी ऐसी बनादी जाए जिसमें विभिन्न फिर्क़ों को नुमाइन्दगी दी जाए जो पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशन के पहले उसे देख लें ताकि प्रकाशन के बाद उसमें कोई आपत्तिजनक बात रह न जाये। एक साल गुजर गया नया सत्र शुरू हो गया पुस्तकें बाजार में आ गईं मगर बड़ी खामियां उनमें मोजूद हैं।

इस मसले का रौशन पहलू यह है कि पिछली २५ जुलाई २००५ को यू०पी० एसेम्बली में विपक्ष के बाज़ सदस्यों ने सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया था। दीनी तालीमी कौंसिल द्वारा प्रकाशित समीक्षा वहां पेश की गई। उसके कोटेशन वहां पढ़े गए और हुकूमत ने वादा किया कि वह इस साल इस समस्या को हल कर देगी लेकिन ऐसा नहीं हो सका। दूसरा दुःख दाई पहलू यह है कि मुस्लिम मेम्बरान और मंत्री साहिबान ने इस में दिलचस्पी और फिक्रमन्दी नहीं दिखाई जिस की आशा थी और जो मिल्लते इस्लामिया (मुस्लिम समुदाय) के लिए संतोष प्रद हो सकती थी। हाईस्कूल और इण्टर की इतिहास की पुस्तकों में मुगल कालीन हुकूमतों औरंगजेब, सैयद अहमद शहीद और सर सैयद के खिलाफ पाठ सामग्री (मवाद) शामिल है। इस्लामी इतिहास को मस्ख़ (तोड़मरोड़) कर पेश किया गया है यहां तक कि रसूले पाक की शान में गुस्ताखाना वाक्य अभी तक मौजूद हैं लेकिन हुकूमत की सतह पर किसी मुसलमान को बेचैनी नहीं है कि लेखकों से ज़वाब तलब किया जाता और फौरी तौर पर इंसाफ का एलान किया जाता।

केन्द्रीय सरकार ने एन.सी.आर.

टी. की पुस्तकों को ऐतिहासिक एतबार से ठीक करने का फैसला किया और उस पर अमल भी किया गया लेकिन वन्दे मातरम के सिलसिले में एक ग़ैर जरूरी बात करके केन्द्रीय मंत्री अर्जुन सिंह ने इस प्रसंग को दोबारा जिन्दा कर दिया जिस पर गुफतगू (चरचा) का दरवाजा एक संघर्ष के बाद बंद हो गया था। देश प्रेम को शब्दों से नापा, तौला नहीं जा सकता और न किसी समुदाय को इसके लिए मजबूर किया जा सकता है आखिर वही हुआ अर्जुन सिंह को अपना बयान बदलना पड़ा लेकिन जरा सी देर में मुसलमानों को जो कुछ सुनना पड़ा और जिस तरह से उनको देश से निकालने की धमकी तक दे दी गई उस का जिम्मेदार कौन होगा और उसकी भरपाई कैसे होगी?

इतिहास और समाजियात के विभिन्न कारक होते हैं विनाश और निर्माण (तख़रीब और तामीर) के विभिन्न गोशे (पक्ष) इन में छुपे होते हैं। खुशगवार तअस्सुरात (रूचिकर प्रभाव) की सुन्दरताएं भी नजर आती हैं। और फिकरी आशियानों को तबाह व बरबाद कर देने वाली बिजलियां भी मौजूद होती हैं। शिक्षा संस्थाओं में विभिन्न समुदाय के बच्चों को एक साथ पढ़ाया जाने वाला इतिहास हमेशा ऐसा होना चाहिए जिस में गुजरे काल की दुःखद घटनाओं के बजाए हालात और घटनाओं की ऐसी रौशन तसवीरें हों जिन से दिलों को जोड़ने, दूसरों के आंसुओं को अपने दमन में जज़्ब करने और एक दूसरे के साथ हमदर्दी, भाई चारा और बेपनाह लगाव का जज़्बा और हौसला पैदा हो। बच्चों के सामने उनके पूर्वजों का जुल्म बयान करने के बजाए उनकी जनसेवाओं का ज़िक्र किया जाए बिगाड़ के बजाए बनाव के पहलू उजागर किये जाएं। वह बच्चे अपने दर्जों से उठें तो उन के ज़ेहन महब्बतों से शरशार हों। पाठ्यक्रम की एक बड़ी जिम्मेदारी है और इस पर देश का उज्जवल भविष्य निर्भरा है। बच्चों के नापोख़्ता (अपरिपक्व) ज़ेहन को अपनी बालिग लेकिन इंतिहाई नकारात्मक सोच से पामाल (पद्दलित) न किया जाए तो बेहतर है।

वक्त बहुत गुजर गया आधी सदी में हम इस तूफान का सामना नहीं कर सके और शायद हम गम्भीरता से इसका विश्लेषण (तजज़िया) भी नहीं कर सके हैं कि प्यारे वतन की बुनियादों को इसी शिक्षा व्यवस्था ने हिला कर रख दिया है। साम्प्रदायिक दंगे, बाबरी मस्जिद का विध्वंस, गुजरात का क़त्ल आम दहशत गर्दी का सैलाब सभी इसी शिक्षा व्यवस्था का अंजाम है। मुल्क के नवजवान नस्लों के साथ लगातार नाइंसाफी होती रही है। उन के विचारों को बराबर दूषित किया जाता रहा है। दिलों में फूट के जज़्बात की परवरिश होती रही और सरकारी पाठ्यपुस्तक में मासूम बच्चों को यही पढ़ाया जाता रहा कि –

"औरंगजेब हिन्दुकुश था जालिम था सितमगर था।" यह बताने की कोशिश नहीं की गयी कि इस औरंगज़ेब ने मन्दिरों को जागीरें दीं थीं और कितनी हिन्दू औरतों की हिफाजत का फ़र्ज़ अदा किया था। यह साबित करने की कोशिश की जाती रही कि मुसलमानों ने इस देश की सेवा नहीं की है। जंगे आजादी में इन का कोई महत्वपूर्ण सहयोग नहीं रहा है। उलमा ने कोई कुर्बानी नहीं दी है। उर्दू की गैरमामूली खिदमात को भी जानबूझ कर भुला दिया गया। इस से मुसलमानों के साथ अन्याय जरूर हुआ है और मुसलमान दुशमन ज़ेहनियत को इतमिनान हासिल हुआ लेकिन मुल्क की तस्वीर बिगड़ गई। भविष्य का ईमानदार और निष्पक्ष इतिहासकार इस को मुल्क से गद्दारी करार देगा। मुसलमान इस सूरतहाल से मुस्तकिल दोचार हैं और मुसलसल इस से नालां और दुखी हैं लेकिन उन्हें इसका भी दुख है कि उनकी मुखालफत और दुश्मनी के जोशे जनूं में इस का ध्यान भी नहीं रखा गया कि इससे देश कमजोर हो रहा है। दरमियान के फासले बढ़ रहे हैं। हिन्दू और मुसलमानों के बीच खाई बढ़ती चली जा रही है और हम अपनी सरकारी शिक्षा व्यवस्था की रोशनी में चलते चलते बहुत दूर निकल आए हैं जहां से वापसी सम्भवतः कठिन मालूम हो रही है। लेकिन कौमों के फैसले हर मुश्किल को आसान बना देते हैं। अगर अब भी यह फैसला कर लिया जाए कि शिक्षा व्यवस्था को सेकुलर बुनियादों पर काइम रखा जाएगा और किसी कीमत पर इस बहुमूल्य सम्पत्ति को नष्ट नहीं होने दिया जाएगा तो अतीत (माजी) की भारी हानि की भरपाई भी सम्भव हो जाएगी और खुशगवार (रूचिकर) भविष्य की प्राप्ति भी आसान हो जाएगी। लेकिन अफसोस है कि हमारी सेकुलर हुकूमतें भी इस के लिए तैयार नजर नहीं आतीं। इस ग़म का मदावा कहां तलाश किया जाए।

वन्दे मातरम ईश विरोधी ?

महाराज विकाशानन्द ब्रह्मचारी
(मुअज्जमनगर वजीर बाग् लखनऊ)

'वन्देमातरम' गीत को लेकर जो वाद–विवाद चल रहा है। इसका मूल बिन्दू जाति या धर्म नहीं है। यह विवाद 'मतवाद' का है। मूल बात तो यह है कि 'वन्देमातरम' गीत में देश तथा धरती की माता के रूप में वन्दना (स्तुति) है।

सर्वेश्वर वादि, बहुदेव वादि उपासक को इसमें कोई दोष (पाप) नजर नहीं आयेगा। वो इसका विरोध करने को ही दोष (पाप) समझेगा। लेकिन एकेश्वरवादि ब्रह्म वादि, एकदेव वादि के लिए इसका पढ़ना आसान नहीं। क्योंकि वह केवल एकं एवं अद्वितीय' निराकार परब्रह्म की ही नमन वन्दना द्वारा उपासना करता है। इसी कारण परब्रह्म को छोड़कर किसी और की नमन वन्दना करना उस उपासक के लिए दोष (पाप) है।

वैदिक धर्मानुसार एक से अधिक मतवाद हैं, जैसे –

१. अद्वैतवाद – श्रीमत शंकराचार्य द्वारा प्रचारित

२. विशिष्टाद्वैतवाद – श्री रामानुजाचार्य द्वारा प्रचारित

३. द्वैतवाद– माध्वाचार्य द्वारा प्रचारित (श्रीमद आनन्दीतीर्थ)

४. शुद्धाद्वैतवाद – श्री वल्लभाचार्य द्वारा प्रचारित

५. द्वैताद्वैतवाद – निम्बाकाचार्य द्वारा प्रचारित

उपनिषद के जमाने में भी विभिन्न मत मौजूद थे। १०८ उपनिषदों में चार प्रकार के मतवाद पाये जाते हैं।

१. ब्रह्मवाद, २. ज्ञान (सन्यास) वाद, ३. योगावाद, ४. भक्तिवाद (देववाद)

इनमें से अद्वैतवाद अथवा ब्रह्मवाद मानने वाला केवल एकं एवं अद्वितीय पर ब्रह्म की ही उपासना (नमन वन्दना) करता है।

वेद–उपनिषद में सृष्टि के मालिक परब्रह्म के वर्णन में उसे एकं एवं अद्वितीय', मूर्तिहीन अचिन्त, इन्द्रियों के परे, सर्वव्यापी, पालक, चालक, शासक, असीम, अनन्त आदि कहा गया है।

'स एष एक एकवृदेक एव' (अर्थवेद संहिता १३/४/१२) अर्थात वह (परब्रह्म) अद्वितीय एकमात्र व्यापक देव केवल एक ही है (श्री राम शर्मा जी)। इसी प्रकार १३/१५ सूक्त के आठ मंत्रों में, १३/६/१, ३ एवं ६/१६/२८ मंत्र, साम संहिता में ३७२ एवं ३८६ मंत्र, शुक्ल यजुर्वेद १२/११७, १७/१६, ४०/४ मंत्र में, ऋक संहिता १/१६४/४६, १/८४/७, १०/८१/३, १०/८२/३, १०/८२/२–३ आदि मंत्र में एकेश्वरवाद का उल्लेख है।

उपनिषद में सृष्टिकर्ता (परब्रह्म) को ही एकं एवं अद्वितीय कहा गया है। छान्दोग्य उपनिषद ६/२/१–२ में एकमेवाद्वितीयम् अर्थात 'एकं एवं अद्वितीय' ही कहा है। इसके अतरिक्त शुक रहस्य उपनिषद ३५मं, श्वेताश्वतर उपनिषद ६/१२ कठोपनिषद २/२/१२ आदि मंत्र उसी ब्रह्म ही की अस्थिर मन से उपासना करने का उपदेश दिया गया है। (सर्वमेल्विदं ब्रह्म तज्जलानिति शान्त उपासितः) अर्थात उत्पन्न रक्षा एक विनाश ब्रह्म से ही होता है। शान्त (स्थिर मन) होकर उसकी उपासना करो।

वेदमंत्रानुसार ३३ देवताओं का उल्लेख है। शतपथ ब्राह्मण, महाभारत आदि में ३३ देवताओं को तीन श्रेणी में बांटा गया है, वृहदारण्यक उपनिषद ३/६/२ मंत्र के अनुसार ३३ देवता ही बताये गये। जैसे आदित्य – १२, रूद्र–११, वसु–८, एवं इन्द्र, प्रजापति मिलाकर ३३ हैं। इसमें वसुगणों में पृथ्वी शामिल है। पृथ्वी देवता के लिए ऋगवेद संहिता में एक ही सूक्त पाया जाता है। (ऋक ५/८४ सूक्त) निरूक्त में देवता का अर्थ विषय है। एकेश्वरवादि (अद्वैतवादि) एक मात्र निराकार परब्रह्म ही की नमन वन्दना द्वारा उपसना करते हैं। एकेश्वरवाद परब्रह्म को छोड़क किसी और की नमन वन्दना करना पाप (दोष) समझता है। ये न तो किसी मूर्ति की नमन वन्दना करते हैं। क्योंकि परब्रह्म (सृष्टिकर्ता) की कोई मूर्तिनहीं है। शुक्ल यजुः ३२/३ मंत्र में न तस्य प्रतिमा अस्ति अर्थात पर ब्रह्म की कोई मूर्ति नहीं है। उपनिषद में बड़े विस्तार से वर्णन है। श्वेताश्वर उपः ६/८–६ दोनों मंत्रों में न तस्य कर्याकरण च... ज्ञान बल किया चः । 'न तस्य ... तस्य

लिगंम' 'स कारण... न चाधिप (८–६)। अर्थ– उप निराकार परमेश्वर के शरीर और इन्द्रियां नहीं है। उसके समान और उससे बड़ा भी कोई नही है, उसकी विविध प्रकार पराशक्ति है। वह सर्व प्रकार ज्ञानयुक्त हैं और बल क्रिया द्वारा सबको वश में करने वाला है, कोई लिंग (चिन्ह) नहीं है। वह सबका कारण है। देवगणों के अधिपति हैं। उसको न कोई बनाने वाला है और न कोई उसका अधिपाति है।

एकेश्वरवादी परब्रह्म की ही उपासना करते हैं। उसके लिए किसी और की नमन वन्दना करना सम्भव नहीं है। एक से अधिक उपनिषदों के मंत्रानुसार देवगणों के अधिपति परब्रह्म हैं। देवगण उसी मालिक के डर से अपना–अपना कार्य कर रहे हैं। भयादस्याग्निस्पति भयात्त्पति सूर्यः। भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पंश्रम। (कठोपनिषद २/३/३) यह मंत्र अन्य उपनिषदों में भी पाया जाता है। जैसे तैत्रिरीय उपनिषद २/८/११, वृद्धारण्यक उपनिषद ३/८/६ में का अर्थ एक है। अर्थात परब्रह्म (अधिपति/मालिक) के भय के कारण अग्नि ताप देता है। सूर्य उदय होकर ताप–रोशनी देता है। वायु बहती है। इन्हीं के भय से इन्द्र, मृत्यु आदि देवता दौड़ते हैं। (परब्रह्म अज्ञानुसार अपना कर्य करते हैं) इसी लिए एकेश्वरवादी उपासक, एकं एवं अद्वितीय शुद्ध पवित्र, निराकार, परब्रह्म को छोड़कर औरकिसी की नमन वन्दना के लिए तैयार नही होता। ब्रिटिश शासन काल में राजा राम मोहन राय ने 'ब्रह्म समाज' की स्थापना की थी। इसी प्रकार एक ईश्वरवादी समाज और भी हैं जो केवल परब्रह्म ही की नमन वन्दना करते हैं।

इस्लाम धर्म भी एकश्वरवादी है, इस्लाम की मूल बुनियाद कलमा (वाक्य) 'ला इलाह इल्लल्लाह' अर्था अल्लाह को छोड़कर कोई उपास्य नहीं है। (इसमें ईला–उपास्य, इस प्रकार का प्रयोग ऋग्वेद के शुरू में ही है 'अग्निमोल' ऋग्वेद १/१/१। 'अल्ला' शब्द शब्दसार गिरीश चन्द्र विध्यारत्न के अनुसार संस्कृत है, अर्थ–आदि देव) 'एकं वं अद्वितीयम' तज्जलानिति शान्त उपासीत, (छांद उपः ३/१४/१) इसका अर्थ भी कलमे के अर्थ के समान है। जैसे वह एक एवं अद्वितीय है। उत्पन्न, रक्षा एवं विनाश केवल उसी से ही हो रहा है। स्थिर होकर उसी की उपासना करो। (विस्तार जानने के लिए वेदान्तसर भूमिका देखें)।

इस्लाम निराकार एकेश्वर ब्रह्मवादी समाज है एक मात्र परब्रह्म (अल्लाह) को छोड़ कर और किसी की नमन वन्दना करना महापाप है। ये दोष (पाप) सभी एकेश्वर ब्रह्मवादी समाज के लिए समान है। इस्लाम कोई नया धर्म नहीं है। बल्कि ये तो एकेश्वर ब्रह्मवादी सत्य सनातन धर्म (वैदिक धर्म) ही का संशोधित रूप है। वर्तमान समाज वैदिक आचरण से अंजान रहने के कारण इस्लामिक आचरण को नया समझते हैं।

वन्देमातरम् गीत 'मातृका देवी' की स्तुति है। इसमें मातृका देवी की नमन वन्दना कीगई है। जिसके कारण शुद्ध पवित्र, निराकार, परब्रह्म उपासक के लिए मातृका वन्दना (वन्देमातरम) गाना असम्भव है।

(पृष्ठ २६ का शेष)

के साथ गुजारें और उन को तालीम व तरबियत में लगायें।''

आज समाज में जो बुराइयां व्याप्त हैं उन्हें दूर करने में मां–बाप की अपनी औलाद के प्रति जिम्मेदारी निभाने का बड़ा महत्व है और समय रहते कुछ करने की जरूरत है। यह उतना ही जरूरी है जितना खाना, कपड़ा और मकान, बल्कि परिस्थिति विशेष में उस से भी अधिक।

Mob. 9935316659
9235849619

STAG INDIA

Dealer Supplier

Ultra Modern Armscovers, Belt, Sting, Bag Toy Air Rifle, Toy Air Pistol, Clearing Implements & All Kinds of Gun Acessories.

9, LATOUCHE ROAD, LUCKNOW-226018, U.P. (India)

Mob. 9335384273
Noor Ahmad 0522-2005079
Prop. 2273297

Haji Noor Ahmad Jewellers

143/75, Joote Wali Gali, Behind Mumtaz Market, Aminabad, Lucknow

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न : शव्वाल के रोजों का क्या हुक्म है और उनके रखने का क्या तरीक़ा है?

उत्तर : शव्वाल के महीने में ६ रोज़े रखना सुन्नत है। रोज़े रखने का तरीक़ा वही है जो रमज़ान के रोज़ों का है, यअ़नी सह़री खाएं और दिन भर रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ों और रोज़ा ख़राब करने वाली बातों से बचें और आफ़ताब ग़ुरूब होने पर इफ़तार करें अलबत्ता नफ़्ल रोज़े या सुन्नत रोज़े की नीयत मग़्रिब बअ़द से सुब्हे सादिक़ तक कर लेना ज़रूरी है। सुब्हे सादिक़ के बअ़द नीयत करने से रोज़ा सह़ी न होगा। मग़्रिब से पहले तो किसी भी रोज़े की नीयत सह़ी नहीं। नफ़्ल या सुन्नत रोज़ा तोड़ देने से कोई कफ़्फ़ारा भी नहीं अलबत्ता क़ज़ा ज़रूरी है।

शव्वाल के ६ रोज़े पूरे महीने में पूरे कर लें चाहे लगातार रखें चाहे नाग़ा कर कर के यह जो मशहूर है कि शव्वाल के ६ रोज़े रखने हों तो ईद के दूसरे दिन एक रोज़ा ज़रूर रखें यह ग़लत मशहूर है, शव्वाल के महीने में ६ रोज़े पूरे कर लें।

प्रश्न : शुरूअ़ सितम्बर के अख़बारों में आया था कि मुफ़्ती अ़ब्दुल मन्नान ने फ़त्वा दिया कि जिस ने जान बूझ कर देवबन्दी आलिम के पीछे नमाज़े जनाज़ा पढ़ी वह इस्लाम से निकल गया वह फिर से कल्मा पढ़े और शादी शुदा था तो उस का निकाह़ टूट गया फिर से निकाह़ पढ़े इस मसअले को समझा कर लिखिये।

उत्तर : सच्चा राही इख़्तिलाफ़ी मसाइल से गुरेज़ करता है। सच्चा राही का मौक़फ़ यह है कि जो कुछ किताब व सुन्नत से साबित है वही इस्लाम है। फुक़हाए इस्लाम की किताब व सुन्नत की रौशनी में लिखी फ़िक़्ह की किताबें भी इस्लाम हैं। अलबत्ता किताब व सुन्नत की रौशनी में फिक़्ही मसाइल निकालने में कभी चूक भी हो सकती है अगर किसी बड़े आ़लिम मुह़क़्क़िक़ को किसी मसअले में चूक नज़र आए तो वह उसे छोड़ दे। देवबन्द और बरेली दोनों जगह बड़े–बड़े उ़लमा गुज़रे हैं लेकिन अफ़्सोस बरेली के बअ़ज़ उ़लमा ने देवबन्द के बअ़ज़ उ़लमा या देवबन्दी उ़लमा के बअ़ज़ मुक़्तदा की तह़रीरों में (मुआ़ज़ल्लाह) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की तौहीन निकाली और उनपर और उनके मानने वालों पर कुफ़्र का फ़तवा लगा दिया ह़ालांकि जिस ग़ैर बरेलवी आ़लिम ने उन तह़रीरों को पढ़ा तो उस में (मआ़ज़ल्लाह) तौहीने रसूल न थी। तह़क़ीक़ से मअ़लूम हुआ इस झूठे इलज़ाम लगाने के बअ़ज़ अस्बाब थे जिन के ज़िक्र की यहां गुंजाइश नहीं। मुफ़्ती अ़ब्दुल मन्नान का फ़त्वा इस हैसियत से सह़ी है कि (मआ़ज़ल्लाह) तौहीने रसूल करने वाले को अपना इमाम बनाना कुफ़्र है। लेकिन इस हैसियत से उन का फ़त्वा ग़लत है बल्कि बड़ा गुनाह है कि जिन कोवह रसूल की तौहीन करने वाला कह रहे हैं उन्होंने रसूल की तौहीन की ही नहीं बल्कि वह तो रसूले खुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से महब्बत को अपना ईमान जानते हैं और आप की पैरवी को इस्लाम मानते हैं और अगर उसके सामने कोई अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अदना तौहीन करे तो उस से लड़ने मरने को तैयार हो जाते हैं। अभी कार्टून वाला मसअला उठा, देवबन्द वालों ने बढ़चढ़ कर उस की मज़म्मत व मुख़ालफ़त की। उ़लमाए देवबन्दसे बारहा इस बारे में पूछा गया तो उन्होंने साफ कहा कि हम अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अदना तौहीन करने वाले को काफ़िर समझते हैं। उस से किसी क़िस्म के तअ़ल्लुक़ को ना दुरुस्त समझते हैं। ऐसी सूरत में देवबन्द के उ़लमा के ख़िलाफ़ मुफ़्ती अ़ब्दुल मन्नान का फ़तवा बिल्कुल ग़लत है। अस्ल मसअला उनके ग्रूप के बअ़ज़ बड़े उ़लमा की पैदाकी हुई ग़लत फ़हमी पैदा कर देने का है। एक ही इ़बारत का मतलब देवबन्द के उ़लमा कुछ बताते हैं तो बरेली के उ़लमा कुछ। मैं ख़्वाह मख़्वाह की बह़स नहीं छेड़ना चाहता हूं। मैं मुफ़्ती अ़ब्दुल मन्नान के फ़त्वे के उस जुज़ को बिल्कुल ग़लत समझता हूं जिस में उ़लमाए देवबन्द को निशाना बनाया गया है। सच्चा राही के पृष्ठों पर यह बह़स लाना पसन्द नहीं करता जिस को मुझ से समझना हो अलग से ज़बानी या ख़त व किताबत से समझ सकता है। असलन मैं उर्दू का आदमी हूं और झगड़ा भी उर्दू इ़बारतों का है इस लिए मुझे उर्दू में लिखा जाए तो बेहतर रहेगा।

आइन्दा नस्ल की फ़िक्र कीजिए

(मौलाना के एक ख़िताब से)

मौ० मुहम्मद राबे हसनी नदवी

हज़रात ! ज़रूरत इस बात की है कि हम और आप आइन्दा नस्ल की फिक्र करें। उनकी सहीह तअलीम व तर्बियत का इन्तिजाम करें। इस लिये कि आइन्दा जिम्मेदारी वही संभालेंगे, यही कौमों का दस्तूर है। अगर हम ने उनकी सही तअलीम व तर्बियत का इन्तिजाम नहीं किया और इसकी फिक्र नहीं की तो आप को मअलूम है क्या होगा? आप की आइन्दा नस्ल उसी तरह परवान चढ़ेगी जैसे खुदरौ (आप से उगा हुआ) पौधे, आप की औलाद आप के बाग और गुलिस्तान के फूल हैं, अगर बाग की देख भाल न की जाए तो बाग वीरान (उजाड़) हो जाता है और उस पर वहशतें (खिन्नताएं) डेरा जमा लेती हैं। फूलों और बेल बूटों के बजाए उस पर खुदरौ पौधों का राज हो जाता है। बाग और गुलिस्तां की इस वीरानी को कौन पसन्द करेगा? आप भी इस बात को पसन्द नहीं करेंग कि आप की नस्ल का गुलिस्ता वीरान व बर्बाद हो जाए इस लिए आप को इस बात की फिक्र करनी चाहिए। हजरात सहीह तअलीम वही है जो इन्सान की दीन और दुन्या दोनों जरूरतों को पूरा करे। हमारा भी यही तरीका होना चाहिए ताकि इन दर्सगाहों के पढ़े हुए, हालात का चैलेंजों का मुकाबला कर सकें और दुन्या की बुराइयों को दूर करें। हमें अफसोस है कि जब यह मुल्क आजाद हुआ तो उस वक्त के रहनुमा और लीडर इन अख्लाकी और माद्दी दोनों लिहाज से मुल्क की तरक्की की फिक्र रखते थे। लेकिन जब इस आजादी पर एक अरसा गुजर गया तो आज मुल्क में अखलाक की दअवत देने वाला भली बातों की फिक्र रखने वाला चिराग लेकर ढून्ढने से भी नहीं मिलता। हालांकि मुल्क व कौम को अख़लाकी हालात सब से जियादा तवज्जुह और फिक्र के काबिल होते हैं। हमारे यह मदरसे अख्लाक व किरदार की तर्बियतगाह हैं। इन्सान की ज़रूरत सिर्फ खाने पीने की नहीं होती बल्कि उखुव्वत व रवादारी, इन्सानियत नवाजी और खैरख्वाही के जजबात भी इन्सान की अहम जरूरतों में से एक है। आज पूरे मुल्क में आप की एक भी आवाज ऐसी नहीं सुनाई देती जो इन रिवायात और अखलाकियात की दअवत दे। आज जो लूट मार और खुदगरजी का बाजार गर्म है, दर हकीकत वह हमारे निजामे तअलीम का नक्स (दोष) है।

मुसलमान पूछते हैं ?

दहशत गर्दी का इल्ज़ाम क्योंकर लगा हमारे नाम

अबू मर्गूब

हम मुस्लिम हैं हम मोमिन हैं
हम ख़ल्क़े ख़ुदा के ख़ादिम हैं
अन्धे लंगड़े लुंजों की
हम दिल से ख़िदमत करते हैं
और भूले भटके राही को
रस्ते पर ला कर रहते हैं
गर्मी के मारे प्यासों को
हम ठण्डा पानी देते हैं
वुसअत भर अपनी भूखों को
खाना भी खिला कर रहते हैं
और अपने पड़ोसी प्यारे के
दुख दर्द में शामिल होते हैं
फिर दहशतगर्दी का इल्ज़ाम
क्योंकर लगा हमारे नाम

हम रब पे भरोसा करते हैं
कुछ ख़ौफ़ नहीं हम रखते हैं
यह उम्र बहुत ही थोड़ी है
हम फ़िक्र वहां की करते हैं
हर ज़ुल्म से हम महफ़ूज़ रहें
यह रब से दुआ हम करते हैं
जब आती घड़ी मज़लूमी की
हम हम्दो सना में रहते हैं
हम दुख पर दुख सह लेते हैं
पर ज़ुल्म ज़रा ना करते हैं
जब कौमें बाहम लड़ती हैं
हक़ हक़ की सदा हम करते हैं
फिर दहशत गर्दी का इल्ज़ाम
क्योंकर लगा हमारे नाम

हीरोशीमा नागा साकी
जिस ने उन की ख़ाक उड़ा दी
वेतनाम का ख़ून बहाकर
मअ़सूमों की, की बरबादी
तालिबान की दीनी हुकूमत
ज़ुल्म से अपने जिस ने मिटा दी
और इराक़ी पब्लिक पर
बमों की बस बारिश करवा दी
इस्राईली मक्कारों की
फिलिस्तीन में बस्ती बसा दी
दहशतगर्दी काम है उन का
वही तो या हैं बड़े फ़सादी
फिर दहशत गर्दी का इल्ज़ाम
क्योंकर लगा हमारे नाम

काम चोर की रोज़ी हराम
करते हैं हम यह एअ़लान
रिश्वत ख़ोरी जुआ शराब
धोखा बाज़ी, झूटी बात
बुग़्ज़ो हसद ग़ीबत कीना
सबसे बचना हमारा काम
बुरा न चाहें किसी का हम
करें हमेशा अच्छे काम
छोरी किसीकी ताकें ना
उस को समझें बहन समान
हो कभी न झगड़ा आपस में
यह दुआ हैं करते सुब्हो शाम
फिर दहशतगर्दी का इल्ज़ाम
क्योंकर लगा हमारे नाम

जब नाप तौल हम करते हैं
तो कमी न बेशी करते हैं
हम माल ख़रीदें या बेचें
तो झूठ नहीं हम कहते हैं
जब काम है करते उजरत पर
तो पूरी मेहनत करते हैं
जब काम हैं करते ठेके पर
तो पूरी शर्तें करते हैं
गो अ़हद करें हम ग़ैरों से
तो पूरा वअ़दा करते हैं
है मिशन हमारा हक़ गोई
हक़ बात सदा हम करते हैं
फिर दहशत गर्दी का इल्ज़ाम
क्योंकर लगा हमारे नाम

रूदौली स्टेशन पर
छुरा पेट में जिसने घोंपा
रौनाही के तालिब को
चलती रेल से जिस ने फेंका
गोदरा स्टेशन पर
वेन्ड्रों को जिस ने लूटा
पैसेन्जर के डिब्बों में
तेल छिड़क कर जिस ने फूंका
फिर गुजराती मअ़सूमों को
जिस ने मारा लूटा फूंका
दहशतगर्द कहो तुम उन को
दहशतगर्दी काम है उन का
फिर दहशतगर्दी का इल्ज़ाम
क्योंकर लगा हमारे नाम

मां–बाप की
औलाद के प्रति ज़िम्मेदारी

एम० हसन अंसारी

हर समझदार मां–बाप को अपनी औलाद से प्यार होता है, वह उनके लिए अच्छे खाने कपड़े का इन्तेजाम करते हैं। कभी–कभी अपने को तकलीफ में डालकर भी। और उनकी तालीम व तरबियत और उनकी शिक्षा–दीक्षा का और स्वास्थ्य का अपनी सकत (सामर्थ्य) भर बेहतर से बेहतर व्यवस्था करते हैं। पर सब ऐसानहीं करते या नहीं कर पाते। नहीं कर पाने के तीन करण हो सकते हैं। (१) अज्ञानता (२) आर्थिक (३) सामाजिक

हिन्दुस्तानी मुसलमानों के सामने आजादी के बाद यह तीनों प्रकार की समस्यायें कमोबेश हमेशा रही हैं और आगे भी बनी रह सकती हैं। यह यथार्थ है। सच्चाई को हमेशा समझदार आंखें खोल कर स्वीकार करने का साहस जुटाते रहे हैं। वर्तमान में तालीम के मैदान में हम पीछे हैं या यूं कहा जाये कि जो हमारी परम्परा रही है हम उस के अनुरूप नहीं रह पाये हैं।

मुसलमानों के अन्दर इच्छा शक्ति का भी इधर कुछ एक दशकों में ह्रास हुआ है। उसमें कमी और गिरावट आई है। इच्छा शक्ति प्रबल हो तो बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान निकल आता है। जरूरत निष्ठा के साथ अनवरत प्रयास करने की है।

नई नस्ल और युवा–पीढ़ी को परवान चढ़ाने में उनकी तालीम व तरबियत में शिक्षा व्यवस्था, पाठ्यक्रम भौतिक संसाधन, सामाजिक परिवेश के साथ–साथ परिवार और सरपरस्तों की बड़ी जिम्मेदारी होती है। बचपन में औलाद का अधिकतर समय परिवार में व्यतीत होता है और उसके बुनियादी संस्कार इसी अवस्था में बनते हैं, जो बड़े टिकाऊ होते हैं। बचपन की छाप मिटा पाना आसान काम नहीं। इसलिए परिवारिक परिवेश का महत्व बहुत अधिक है क्योंकि हर बच्चे का पहला मदरसा और उस की प्रथम पाठशाला स्वयं उस का अपना घर है। मुसलमानों के विचार, कर्म और फल का स्रोत जहां से वह मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं, कुर्आन और हदीस हैं। कुर्आन की सूरः ६६–तहरीम की छठीआयत में मुसलमानों को सम्बोधित करके इरशाद होता है:–

तर्जुमः " ऐ वह लोगो जो ईमान लाये हो, अपने आप को और अपने घर वालों को ऐसी आग से बचाओ जिसका ईधन आदमी और पत्थर हैं और जिस पर सख्त मिजाज फरिश्ते मुकर्रर हैं जो अल्लाह के हुक्म की नाफरमानी नहीं करते और जिसका उनको हुक्म दिया जाता है वह बजा लाते हैं।"

इस आयत की व्याख्या करते हुए महान विचारक और लेखक मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी रह० अपने एक सम्बोधन में फरमाते हैं :–

"मैं आप से पूछता हूं कि क्या कोई आदमी जान बूझ कर अपने लड़कों को अपने घर वालों को आग में झोंकता है? आग में घुसने देता है? इस का क्या मतलब है कि अल्लाह कहता है कि ऐ वह लोगो जो खुद ईमान ला चुके हो, अब तुम्हारा काम यह है कि अपनी जानों को बचाओ । अपने घर वालों को बचाओ, दोजख की आग से। क्या कोई वाक्यः आपने सीरत में ऐसा पढ़ा है कि सहाबः किराम ने (मआज अल्लाह) इरादा किया था कि अपने बच्चों को आग के हवाले कर दें, या बच्चे आग में कूदना चाहते हैं और सहाबः किराम और उस वक्त के मुसलमान खामोश बैठे हुए तमाशा देखे रहे थे,और इस सूरते हाल पर राजी थे। क्या ऐसा कोई वाक्यः आप की नजर से गुजरा है? तो क्या बेजरूरत यह बात कही गयी है कि ऐ वह लोगो जो खुद ईमान ला चुके हो तुम्हारा काम यह है कि अपनी जानों को, अपने घर वालों को आगे से बचाओ। यह कौन सी आग थी और कब यह वाक्यः पेश आया था या पेश आने वाला था कि मुसलमानों के घरों के बच्चे आग में कूदना चाहते थे, और मां–बाप सो रहे थे, फिक्र नहीं कर रहे थे, अल्लाह तआला ने उस वक्त वही नाजिल की,सब चौंक गये और सब अपने बच्चों की फिक्र में लग गये कि आग में छलांग न लगायें, फिर इस आयत का मतलब क्या है? क्या इस आयत का मतलब इस के सिवा कुछ और हो सकता है कि अपने बच्चों को, अपने घर वालों को ऐसी चीजों से बचाओ जो आग तक ले जाने वाली हैं, जिनका अंजाम यह होने वाला है कि दोजख में जायें,

वरना वह कौन से इन्सान हैं जो अपने बच्चों को आग की तरफ जाते हुए देखें और उन को रोक न लें? खतरा सिर्फ इस बात का है कि आदमी यह न जानता हो कि इस के नतीजे में जलना होता है। तो मतलब यह हुआ कि ऐसे असबाब से बचाओ जो दोजख की आग तक पहुंचाने वाले हैं। .....

सूरते हाल (वस्तु स्थिति) इस समय यही है

"अब मैं आप से अर्ज करता हूं कि सूरते हाल इस वक्त यही है। बच्चों की दीनी तालीम का इन्तेजाम न करना बच्चों को इस माहौल के बिल्कुल हवाले कर देना और उन को इसके रहम व करम पर छोड़ देना जो न इस बात का मुकल्लफ (सुसज्जित) है न इस बात का मुददई (दावा करने वाला) न इस बात अहल (योग्य) कि वह बच्चों को वह तालीम देगा जिस पर निजात मौकूफ है। पैगम्बरों की लाई हुई वह तालीम जिस से अज्ञानता के नतीजः में ईमान का खतरा है, आखिरत की हिलाकत है। तो अब यह देखना चाहिए कि इस बात को कैसे गवारा किया जा रहा है? मौजूदा तालीमी निजाम सिर्फ सेकुलर नहीं, वह एक पाज़िटिव सिस्टम आफ एजूकेशन है, हिन्दू माइथोलाजी इस में शामिल है। अंग्रेजों के जमाने में तालीम सेकुलर थी, बिल्ली, कुत्ते के किस्से होते थे और हम में से बहुत से लोगों ने अंग्रेजों के शासन काल में अंग्रेजी पढ़ी है। उस समय भाषा सिखाने वाली प्रारम्भिक किताबों से न किसी के अकीदा पर असर पड़ता था न किसी मखलूक का तकद्दुस (पवित्रता, महत्ता) पैदा होता था और न इस सृष्टि (कायनात) में किसी मखलूक का तसर्रुफ व इख्तियार मालूम होता था। उस समय भेड़िये चीते, बन्दर और लोमड़ी और बिल्ली कुत्ते के किस्से बच्चे पढ़ते थे, वैसे के वैसे ही घर आते थे जैसे जाते थे। लेकिन अब सूरते हाल यह नहीं है। सरकारी पाठ्यक्रम की किताबों में अक़ीदा पर असर डालने वाल पाठ, किस्से कहानियां और विषय होते हैं और जो कसर किताबों में रह जाती है उसे वहां का माहौल पूरा कर देता है।

अगर आप ने बच्चे का नाम किसी स्कूल में लिखवाया और बाहर से कोई इन्तेजाम नहीं किया तो गोया आप ने एक तरह से तरग़ीब दी है कि वह हर गैर इस्लामी बात मानता चला जाये, अब अगर वह मानता चला गया और बाहर से कोई इन्तेज़ाम नहीं है, न उर्दू जानता है कि दीनी किताबें पढ़ सके, न मुहल्ले में किसी मकतब का इन्तेजाम है तो आप बताइये क्या यह आयत आप को सम्बोधित नहीं है, क्या आप इस के मुखातब नहीं हैं?"

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है –

"ऐ ईमान वालो! बचाओ अपनी जानों को और अपने घर वालों को और अपने तअल्लुक वालों को और अपने सम्बन्धियों को – इनमें घर वाले नातेदार भी शामिल हैं और बच्चे औलाद और पूरा खानदानी सिलसिला भी इस में दाखिल है।"

तिरमिजी की एक हदीस है :–

तजर्मः "फरमाया अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कोई बाप अपने बेटे को सबसे बेहतर जो तोहफा देता है वह अच्छा ढंग और हुस्ने अख़लाक है।"

मौलाना अब्दुल करीम पारिख साहब अपनी किताब तालीमुल हदीस भाग एक में इस हदीस की व्याख्या करते हुए, जिस से मुस्लिम और गैर मुस्लिम दानों फायदा उठा सकते हैं, लिखते हैं–

"एक खास बात जिस की तरफ लोगों का ध्यान तालीमे नबवी में आकर्षित किया गया है वह है अपने बच्चों की अच्छी तरबियत करना और अच्छे अख़लाक़ व आदात सिखाना और समाज और मानवता के लिए उपयोगी नागरिक बनाना। लेकिन आज का दौर ऐसा कुछ हो गया है कि लोग इस की तरफ ज्यादा ध्यान ही नहीं देते। बच्चे अच्छे अच्छे कपड़े पहनते हैं खेल कूद करते हैं। धींगा मस्ती करते हैं स्कूल जाते हैं नहीं भी जाते, पढ़ा नहीं पढ़ा कुछध्यान नही। दुनिया भर के अच्छे बुरे मशगलों (व्यसन) मं अपने आप को मशगूल रखते हैं और मां बाप बच्चों की तालीम व तरबियत की तरफ कुछ ज्यादा ध्यान नहीं देते। अगर लोग इस रस्म को अपनाते रहे तो आगे चलकर समाज में जो खराबी पैदा होगी वह बड़ी खतरनाक और बहुत भयानक होगी जिस का कुछ अन्दाजा आज कल हम सब को हो रहा है। अतः मां बाप को अपनी औलाद के बारे में बहुत ही फिक्रमन्द होना चाहिए। बच्चों का रहन सहन, चलना, फिरना, सोना जागना, नमाज तिलावते कुर्आन मजीद, दोस्तों से मिलना जुलना, बातचीत करना, तालीम इन सारी चीजों की देख–रेख करते रहना चाहिए। नर्मी और प्यार से समझाते बताते रहना चाहिये।

होश व हवास संभाल ले, चलने फिरने के काबिल हो जाये तो अपने कारोबारी मसरूफियात में भी बच्चों को साथ रखें। मां–बाप को चाहिए कि होटलों, क्लबों, चौक और बाजार और फालतू मसरूफियात में अपना वक्त गुजारने के बजाय ज्यादा वक्त बच्चों

(शेष पृष्ठ २४ पर)

अवध का आखिरी ताजदार

वाजिद अली शाह

इदारा

वाजिद अली शाह की पैदाइश स० १८२२ ई० में लखनऊ में हुई। दादा मुहम्मद अली शाह खाना नशीन थे, गाजियुद्दीन हैदर की बादशाहत थी। स० १८४२ ई० में जब दादा मुहम्मद अली शाह का इन्तिकाल हुआ तो वालिद अमजद अली शाह तख्त नशीन हुए उस समय वाजिद अली शाह वलीअहद (उत्तराधिकारी) हुए। अपने वालिद के बाद सन० १८४७ ई० में वाजिद अली शाह तख्ते हुकूमत पर बैठे।

वाजिद अली शाह शुरूअ जवानी ही से भोग विलास में दिल चस्पी रखते थे, १५ साल की उम्र में उन की शादी नवाब यूसुफ अली खां बहादुर सम्सामे जंग की बेटी से हो गई थी।

वजीरों के लिहाज से वाजिद अली शाह के दौर को दो हिस्सों में तक्सीम किया जा सकता है :

अमीनुद्दौला का दौर : १३ फरवरी १८४७ ई० से ६ जुलाई १८४७ ई० तक **अली नकी खां का दौर :** ५ अगस्त १८४७ ई० से ७ फरवरी १८५६ तक जब अंग्रेजों की जानिब से हुकूमत की जब्ती का एअलान हो गया और वाजिद अली शाह को लखनऊ से कलकत्ता ले जाकर मटया बुर्ज में रखा गया। इस सिलसिले की दास्ताने गम खुद बादशाह की लिखी हुई "हुजने अखतर" से पेश है।

(अगले अंक में दोनों दौरों का संक्षिप्त परिचय दिया जायेगा।)

दास्ताने ग़म

वाजिद अली शाह अख्तर

यह वाजिद अली इब्ने अमजद अली
सुनाता है अब दास्तां रंज की
हुआ हुक्मे जनरल गवर्नर ब प्यार
करो सलतनत को खला एक बार
जफाकश का शाहे अवध नाम है
हुकूमत का आखिर ये अंजाम है
जो वो लार्ड डल्हौजी उस वक्त थे
मजामीन उन्होंने ये खत में लिखे
रिआया बहुत तुम से नाराज है
तुम्हारी रियासत है बदनाम शै
रिआया न देखेंगे हरगिज तबाह
फकत नाम के तुम रहो बादशाह
महीना हर इक माह इक लाख का
मिलेगा तुम्हें कुछ नहीं शक जरा
रेजीडेंट जनरल जो ओटर्म थे
गवर्नर का खत मुझ को वह दे गये
हुआ घर में कुहराम सुन कर ये बात
वह दिन दोपहर हो गई सारी रात
वह लाये थे इस तरह की साथ फौज
कि जिस तरह आती है दरया में मौज
यहां जुज इताअत न था दिल में शर्र
न थी ऐसे दिन की तो हरगिज खबर
बुला कर अजीजों को मैंने कहा
कि रुख्सत मैं होता हूं हाफिज खुदा

किया बन्दे ने लखनऊ से सफर
लिया साथ थोड़ा सा कुछ माहजर
रजब भर रहे कानपुर में मुकीम
बिरन्डन के, बंगले में बा खौफो बीम
दिखाई दिया माह शाबां का जब
रवाना हुए वां से बा सद तअ़ब
इलाहा जो आबाद है एक नाम
रहे आठ दिन उस में ऐ खुश खराम
बनारस में आकर रहे चौदा रोज
वो राजा की कोठी में हम सीना सोज
बहुत पेश आया इताअत के साथ
उतारा मुझे कोठी में हाथों हाथ
वहां पर दुखानी किया इक जहाज
चढ़े उस पे जिस दम हुए सरफराज
दिखाई दिया जब कि माहे सियाम
तो कलकत्ता में आए ऐं नेक नाम
१८५७ई० के गद्र में मटिया बुर्ज से
फोर्ट विलयम में कैदी की तरह रखे गये।
हुए बन्द दर कैद खाने के जब
लिखूं क्या जो गुजरा सितम और ग़ज़ब
कलेजा मेरे मुंह को आ आ गया
रूका दम जो सीने में घबरा गया
जनो मर्द तेईस थे मेरे साथ
उन्हें लाए कोठी में सब हाथों हाथ

वाजिद अली शाह की बाकी उम्र इसी मटया बुर्ज (कलकत्ता) में बसर हुई और यही १२०६ हिज्री में इन्तिकाल किया।

धार्मिक क्रान्ति का युग

श्री नेत्र पाण्डेय

(७) पंच–महाव्रत की आवश्यकता –जीव को कर्मो के बन्धन से मुक्त करने के लिये जैन–तीर्थाकर पंच महाव्रत पर भी बड़ा जोर देते हैं। यह पाँच महाव्रत अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह तथा ब्रह्मचर्य है। अब इनकी संक्षिप्त व्याख्या कर देना आवश्यक है !

(क) अहिंसा– जैन धर्म में अहिंसा पर बड़ा बल दिया गया है। जैन लोग वैदिक कर्म–काण्ड अर्थात् यज्ञ तथा बलि के घोर विरोधी हैं। वे प्राणी पर दया दिखाने के समर्थक हैं। अहिंसा का केवल यही तात्पर्य नहीं है कि किसी की हत्या न की जाय वरन् अहिंसा का वास्तविक तात्पर्य यह है कि न हिंसा की कभी कल्पना करनी चाहिए, न उनके सम्बन्ध में बातचीत करना चाहिए, न दूसरों को इसके लिए आज्ञा देनी चाहिये और न हिंसा करने के लिये किसी को प्रोत्साहित करना चाहिए।

(ख) सत्य–सत्य तात्पर्य केवल सत्य–भाषण से नहीं है वरन् यह सुन्दर तथा मधुर भी होना चाहिये। इस व्रत को पूरा करने के लिये क्रोध, भय तथा लोभ पर विजय प्राप्त करना आवश्यक है।

(ग) अस्तेय–अस्तेय का अर्थ है चोरी न करना। जैनियों के विचार में धन मनुष्य का बाहरी जीवन है। अतएव किसी का धन लेना उसका बाहरी जीवन लेना है। यदि धन के बिना जीवन सम्भव नहीं है तो किसी का धन लेना उसका जीवन लेना है और वह एक प्रकार की हिंसा है।

(घ) अपरिग्रह– इसका तात्पर्य यह है कि सम्पत्ति का संग्रह नहीं करना चाहिये और न किसी चीज में आसक्त होना चाहिए। जब तक मनुष्य में धन–लोलुपता रहती है तब तक वह कर्मो के बन्धन से मुक्त नहीं हो सकता।

(ड.)ब्रह्मचर्य–ब्रह्मचर्य का वास्तविक अर्थ होता है सभी प्रकार की विषय–वासनाओं को त्याग देना। न तो कभी अपने मन को विषय–वासनाओं की ओर जाने देना चाहिये और न कभी उसके विषय में बातचीत करनी चाहिये।

(८) व्रत तथा तपस्या का महत्व–जो कर्म जीव में प्रवेश कर गये हैं उनको हटाने का एकमात्र उपाय तपस्या है। अतएव जैन धर्म में व्रत, उपवास तथा तपस्या को बड़ा महत्व दिया गया है। जैनियों का विश्वास है कि तपस्या तथा संयम से आत्मा को मुक्ति मिलती है। आमरण अनशन को इस धर्म में बड़ा उत्तम माना गया है।

(९) तीर्थड.करों की उपसना में विश्वास–जैनी लोग न तो ईश्वर में विश्वास करते है और न उनकी उपासना में। न वेदों को प्रमाणिक ग्रन्थ मानते हैं और न वैदिक देवी–देवताओं में उनका कोई विश्वास है। इनके स्थान पर वे तीर्थड.करों तथा उनके उपदेशों में विश्वास करते हैं और इन उपदेशों को ही ज्ञान का साधन मानते है। वे अपने तीर्थंकरों को सांसारिक बन्धनो से मुक्त, दुख–रहित, सर्व–शक्तिमान् सर्वज्ञ तथा परमात्मान् मानते है और उन्हीं की उपासना करते है।

श्वेताम्बर तथा दिगम्बर– कालान्तर में जैन–धर्म में दो सम्प्रदाय हो गये जिसमें से एक को श्वेताम्बर और दूसरे को दिगम्बर कहते हैं। यह विभाजन संभवतः पहली शताब्दी में हुआ। श्वेताम्बर दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थात् श्वेत तथा अम्बर। श्वेत का अर्थ होता है सफेद और अम्बर सदस्य सफेद वस्त्र धारण करते हैं। ये लोग अपनी मूर्तियों को सफेद वस्त्र पहनाते है। ये लोग बड़े उदार तथा सुधारवादी होते हैं और जैन–धर्म के अत्यन्त कठोर नियमों को ढीला कर देने में संकोच नहीं करते। दिगम्बर भी दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थात् दिक् तथा अम्बर। दिक् का अर्थ होता है दिशा और अम्बर का अर्थ होता है वस्त्र। इस प्रकार दिगम्बर उस संप्रदाय को कहते है जिसके सदस्य दिशाओं को ही अपना वस्त्र मानते हैं, यानी नंगे रहते हैं। ये लोग मूर्तियों को भी नंगा रखते है। दिगम्बर लोग बड़े कटट्र होते है और जैन–धर्म के कठोर नियमों के पालन करने के पक्षपाती होते है। दिगम्बर लोग पूर्णरूप से सम्पत्ति–त्याग में विश्वास करते है। इनके विचार में एक आदर्श साधु भोजन नहीं ग्रहण करता। यह लोग स्त्रियों को मोक्ष कर भागी नहीं समझते। स्त्री जब पुरूष की योनि में जन्म लेती है तभी मोक्ष प्राप्त कर सकती है। यह लोग श्वेताम्बरों के धर्म–ग्रन्थों को भी नहीं मानते।

जैन–धर्म का प्रचार–महावीर स्वामी ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् बड़े उत्साह के साथ अपने धर्म का प्रचार किया करते थे और वर्ष में आठ महीने

घूम–घूम कर अपने मत का प्रचार किया करते थे और वर्ष के चार महीने वे किसी नगर में व्यतीत करते थे। धीरे–ध ीरे कोशल, मगध, विदेह, अवन्ती आदि राज्यों में जैन–धर्म का प्रचार हो गया। कालांतर में मथुरा तथा मालवा में भी जैन–धर्म का प्रचार हो गया था। यद्यपि धीरे–धीरे जैन–धर्म का प्रचार सम्पूर्ण भारतवर्ष में हो गया परन्तु अपने नियमों की कठोरता, दर्शन की क्लिष्टता, प्रचारकों के अभाव तथा राजकीय आश्रम के अभाव एवं अन्य प्रबल धर्मो की प्रतिद्वंद्विता के कारण वह कभी भी अध िक लोकप्रिय धर्म न बन सका और इसके अनुयायियों की संख्या सीमित रही। आजकल अधिकांशतः वैश्य लोग ही इसके अनुयायी है।

जैन–धर्म की सांस्कृतिक देन – यद्यपि जैन–धर्म का प्रचार बड़ा ही सीमित रहा और यह कभी भी अधिक प्रभावशाली धर्म न बन सका परन्तु हमारे देश को इसकी सांस्कृतिक देन बहुत बड़ी है। इसकी सबसे बड़ी देन साहित्यिक है। जैन विद्वानों ने भी विभिन्न कालों में लोक–भाषाओं में ग्रन्थों की रचना करके इन भाषाओं के परिवर्द्धन तथा परिमार्जन में बड़ा योग दिया। अधिकांश जैन साहित्य प्राकृत भाषा में लिखा गया है जिससे प्राकृत भाषा में विकास में योग मिला है। राजपूत काल में अनेक जैन आचार्यों ने प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं के कई ग्रन्थ लिखे। दक्षिण भारत में जैन आचार्यों ने कन्नड़ भाषा में ग्रन्थों की रचना करके उसे सम्पन्न बनाया। जैनी आचार्यों ने संस्कृत में भी ग्रंथ लिखे हैं परन्तु उसकी प्रधान देन प्रादेशिक भाषाओं को ही है।

कला के क्षेत्र में भी जैनियों की देन अपूर्व है। जैनियों के भव्य मंदिर आज देश के विभिन्न भागों में पाये जाते हैं। राजस्थान में आबू पर्वत पर बना हुआ जैनियों का मंदिर भारतीय कला का सर्वोत्कृष्ट प्रमाण है। हाथ से लिखे गये जैन ग्रन्थों पर सुन्दर चित्र भी मिलते हैं। वे जैन–चित्रकारी के उत्तम प्रमाण हैं। मूर्ति–कला के विकास में भी जैनियों का कुछ कम योगदान नहीं है।

जैनियों की दार्शनिक देन भी सांस्कृतिक दृष्टिकोण से बहुत महत्व रखती है। सत्य की खोज के लिए जैनियों ने जिस स्याद्वाद का प्रतिपादन किया है वह एक अमूल्य देन है। स्याद्वाद का अर्थ होता है – संभवतः ऐसा है, क्यों हम सत्य के केवल एक स्वरूप को देख करके ही सम्पूर्ण सत्य के विषय में एक धारणा बना लेते हैं जब कि सत्य के अनेक स्वरूप होते हैं परिणाम यह होता है कि हम उन अन्धे आदमियों की तरह सत्य की खोज नहीं कर पाते जो हाथी के दांत, कान अथवा पैर पकड़ करके ही सम्पूर्ण हाथी के संबंध में ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं।

अब जैन–धर्म के समकक्ष दूसरे नास्तिक एवं क्रांतिकारी धर्म के विषय में कुछ परिचय दे देना आवश्यक है जिसके वैदिक धर्म का विरोध किया और बौद्धधर्म के नामसे प्रसिद्ध है।

बौद्ध–धर्म – बौद्ध संस्कृति के बुद्ध शब्द से बना है। बुद्ध उस व्यक्ति को कहते हैं जिसे बोधि अर्थात् ज्ञान प्राप्त हो गया हो। बुद्ध के अनुयायियों को बुद्ध कहते हैं। और जिस धर्म का ये लोग अनुसरण करते हैं उसे बौद्ध–ध र्म कहते हैं। बौद्ध–धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध माने जाते हैं। बुद्ध जी का बचपन का नाम सिद्धार्थ था। सिद्धार्थ दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थात् सिद्ध तथा अर्थ। सिद्ध का अर्थ होता है पूरा और अर्थ का तात्पर्य होता है इच्छा अथवा कामना। इस प्रकार सिद्धार्थ का अर्थ हुआ इच्छा अथवा कामना की पूर्ति। बुद्ध के जन्म के पहले उनके पिता के कोई सन्तान न थी अतएव पुत्र की प्राप्ति की उनकी बड़ी प्रबल कामना थी। बुद्ध जी के जन्म से उनके पिता की मनोकामना की पूर्ति हो गई। सम्भवतः इसी से इन्हेंने अपने पुत्र का नाम सिद्धार्थ रख दिया जिसके जन्म से उनके अर्थ (कामना) की सिद्धि हो गई। सिद्धार्थ को गौतम के नाम से भी पुकारा गया है। उनके गौतम का नाम पड़ने का यह कारण प्रतीत होता है कि यह गौतम गोत्र के क्षत्रिय वंश में पैदा हुए थे। उनके गौतम नाम पड़ने से दूसरा कारण यह बतलाया जाता है कि उनकी माता की मृत्यु के उपरान्त उनकी विमाता प्रजापति गौतमी ने उनके पालन–पोषण किया था। अतएव गौतम के नाम पर इनका नाम गौतम पड़ गया। सन्यास–ग्रहण करने के उपरान्त जब अपने संयम तथा चिंतन द्वारा सिद्धार्थ ने बुद्धि अथवा ज्ञान प्राप्त कर लिया तब वे बुद्ध कहलाये। जिसे ज्ञान का आलोक उन्हें मिला था उसे प्राप्त करने के लिए जो लोग उनके अनुयायी बने वे बौद्ध कहलाये और जिस धर्म का उन्होंने प्रचार किया, वह बौद्ध धर्म कहलाया। अब इस क्रांतिकारी तथा अत्यन्त प्रभावशाली धर्म के जन्मदाता के जीवन का संक्षिप्त परिचय दे देना आवश्यक है।

आंखों से सूखते आंसू

बढ़ती उम्र के साथ आंखों से जुड़ी शिकायतें भी धीरे–धीरे बढ़ती ही जाती हैं। ऐसा माना जाता है कि ६५ वर्ष की आयु के बाद करीब ७५ प्रतिशत लोग आंखों की शिकायत से परेशान रहते हैं और ६० के बाद शत प्रतिशत लोगों की आंखों में आंसुओं की कमी रहती है।

औरतें रजोनिवृत्ति के बाद आंसुओं की कमी से प्रभावित होती हैं क्योंकि तब उन के शरीर में इस्ट्रोजन व एंड्रोजन हार्मोंस की कमी होने के काण आंसू बनाने वाली लेकराइमल ग्रंथि से आंसुओं का बनना कम हो जाता है।

संवेदनशील कोर्निया से शिराओं द्वारा सूचना लेकराइमल ग्रंथि तक जाने से ही आंसू बनते हैं। पुरुषों में आंसू बनने की क्षमता ५५–६० की अवस्था में घटनी शुरू होती है और बढ़ती उम्र के साथ घटती जाती है।

आंसुओं के सूखने का एक और कारण उन का जल्दी से वाष्पीकरण भी है। डाक्टरों का मानना है कि कुछ लोगों में आंसू बनाने की क्षमता तो सामान्य होती है मगर किन्हीं कारणों से आंसुओं की परत के जल्दी सूखने से उन की कमी हो जाती है।

आंसुओं की परत (टिअर फिल्म) और उसका महत्व

आंसुओं की परत ३ पतली–पतली परतों द्वारा बनी होती है। सब से अंदर वाली परत कंजक्टाइवा में स्थित गोबलेट ग्रंथियों द्वारा उत्पन्न म्यूकस से बनी होती है।

बीच की परत मोटी तरलीय पानी की तरह होती और उसका मुख्य कार्य होता है आंख को गीला रखना कीटाणुओं से आंख की रक्षा करना और बेकार पदार्थों को आंख से हटा कर आंसुओं की नली द्वारा नाक में भेजना।

तीसरी पतली परत तैलीय परत है जो पलकों में स्थित मेबोमियन ग्रंथि द्वारा निर्मित हो कर 'टिअर फिल्म' को वाष्पीकरण से बचाती है।

अगर आंखों में किसी तरह की कमी हो, जैसे कि 'म्यूकस' का या 'तैलीय' परत का कम बनना, तो आंखों में आंसुओं की कमी के लक्षण जाहिर हो जाते हैं।

आंसुओं के सूखने का कारण

बुढ़ापा : यह आंसुओं के सूचना का प्रमुख कारण है। बढ़ती उम्र के साथ–साथ आंसुओं के बनने में कमी आ जाती है। औरतें करीब ५० साल बाद और पुरुष करीब ६० साल के बाद प्रभावित होते हैं।

हार्मोन्स

औरतों में रजोनिवृत्ति के बाद इस्ट्रोजन व एंड्रोजन की कमी के कारण आंसुओं में कमी होती है। हार्मोंस की कमी कोर्निया की संवेदनशीलता को प्रभावित कर आंसुओं में कमी लाती है। पुरूषों में हार्मोंस का असर करीब ६० साल के बाद होता है।

इम्यूनोलोजिकल – शरीर के कुछ बीमार वाले हिस्सों से 'एंटीजन' खून में बह कर लेकराइमल ग्रंथि में 'इन्फ्लेमेशन' कर आंसू को बनाने की क्षमता को कम करता है। इस क्रिया को इम्यूनोलोजिकल रिएक्शन कहते हैं। घुटनों में व अन्य जोड़ों में रिह्यूमेटिज्म की बीमारी के कारण आंख के आंसुओं में कमी एवं मुंह में थूक बनने में भी कमी होती है। आंखें अधिक सूख जाती हैं। इस बीमारी को जोग्रेन सिन्ड्रोम कहते हैं।

दवाइयों का असर : ब्लड प्रेशर, एलर्जी व दिमागी बीमारियों में काम आने वाली दवाएं भी आंसुओं को प्रभावित करती हैं। आंख में डालने वाली जितनी भी दवाएं हैं उनकी क्षमता को सुरक्षित रखने के लिए उन में अलग–अलग प्रिजरवेटिव दवाएं मिली रहती हैं जिन के लगातार प्रयोग से आंसुओं की मात्रा प्रभावित होती है।

विटामिन ए की कमी से म्यूकस लेयर प्रभावित होती है।

लेजिक शल्य क्रिया : चश्मे से छुटकारा पाने के लिए की गई 'लेजिक सर्जरी' करीब ४ प्रतिशत जवान आंखों में सूखने की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। क्योंकि लेजिक सर्जरी से कोर्निया के प्रभावित होने से आंसू बनने में कमी होती हैं।

कंप्यूटर विजन सिन्ड्रोम

कंप्यूटर पर काम करने वाला व्यक्ति मौनीटर को देखता रहता है। इस प्रकार घूर कर देखने से पलकों के झपकने में कमी आती है जिस से टिअर फिल्म सूख जाती है व आंखों में 'ड्राई

आई' संबंधी शिकायत होने लगती है।

कांटेक्ट लेंसेस का इस्तेमाल (चाहे वह साफट हो या सेमी साफट हो) : साफ्ट लेंस आसुओं को सोख लेता है और सेमी साफ्ट लेंस तैलीय लेयर को प्रभावित करता है।

वातानुकूलित कमरे में अगर एअरकंडीशनर की हवा सीधी आंखों में आती है तो आंसू सूख जाते हैं।

आंखों में ट्रेकोमा या अन्य संक्रमण रहने से या किसी रासायनिक पदार्थ या तेजाब आदि के गिरने से आंसू सूख जाते है।

निदान

मरीज की उम्र और उसकी आंखों की परेशानियों की जानकारी निदान में बेहद सहायक होती है। आंखों से खासतौर से धागेनुमा गीड़ का आना, दोपहर या शाम के समय परेशानियों का बढ़ जाना, गरम वातावरण में विशेष असुविधा, कंप्यूटर के लगातार प्रयोग से आंखों में जलन व किरकिरापन, आंखों पर बराबर पानी छिड़कने की इच्छा आदि बातें ड्राई आई के निदान में सहायक हैं। जहां चिकित्सक को शंका होती है वहां वह आंखों की विस्तृत जांच के अलावा आंसुओं की मात्रा को नापने के लिए शरमर टेस्ट करता है और आंसुओं के गुणात्मक विश्लेषण के लिए टिअर फिल्म ब्रेकअप टाइम की जांच करता है।

पलकों की बनावट पलकों पर संक्रमण और मेबोमियन ग्रंथियों की जांच कर समुचित निदान किया जाता है। आंसुओं की भारी कमी के साथ–साथ मुंह के सूखने की शिकायत शरीर में गठिया की बीमारी की तरफ इशारा करते हैं।

उपचार

सूखती आंखों वाले हर मरीज को यह समझना बेहद जरूरी है कि उसकी बीमारी का पूर्ण रूप से इलाज कहीं भी संभव नहीं है। जितने भी उपचार, चाहे वह दवाएं हो या सर्जरी, उन से किसी हद तक ही आराम संभव है।

दवाएं

ड्राई आई का मुख्य इलाज है आंखों में लगातार दिन में ३ से ६ बार कृत्रिम टिअर ड्राप्स का डालना। यह दवा लम्बे समय तक डालनी पड़ती है। इन दवाओं में मुख्यतया पोलीविनायल एलकोहाल पोवीड़ोन, कारबोक्सी मीथाइल सेल्यूलोज आदि हैं।

आंखों में बारबार पानी के छींटे मारने पर कुछ समय के लिए अवश्य आराम आता है पर लम्बे समय के लिए वह नुकसाददायक है क्योंकि पानी से थोड़े बहुत प्राकृतिक आंसू जो बनते हैं वह भी धुल जाते हैं।

रात के समय आंखों में डालने के लिए जेली के रूप में दवाएं उपलब्ध हैं। जो लम्बे समय तक आंखों में फायदा पहुंचाती हैं।

भेंगापन व उसकी चिकित्सा

प्रकृति ने आंखों को सुरक्षित रखने क लिए उन को हड्डियों के गहरे गडढ़ों में स्थापित किया है। हर आंख को ६ मांसपेशियों में इस प्रकार बांधा है कि दोनों आंखों की दृष्टि सेवा समानान्तर रहे एवं दोनों आंखें एक तरफ देखें व साथ–साथ घूमें और मस्तिष्क को दृष्टि स्नायु के द्वारा साथ–साथ समाचार भी प्रसारित करें। मगर इस खास संरचना में कभी–कभी प्रकृति से कुछ गड़बड़ियां भी हो जाती हैं। इन्हीं में से एक गड़बड़ी आंखों का भेंगापन भी है।

आमतौर पर जब बच्चा पैदा होता है तब उस की दोनों आंखों सीधी होती हैं और स्वतंत्रता से कार्य करती हैं। धीरे–धीरे दोनों आंखां में तालमेल पैदा होता है और वे किसी भी चीज को एक साथ देखने की क्षमता उपार्जित करती हैं। आंखों के पूर्ण सौमंजस्य को 'बाइनोकूलर दृष्टि' कहते हैं। इस को पूरी तरह से स्थापित होने में ३–४ साल लगते हैं।

यदि इन ३–४ साल के दौरान दोनों आंखों में संतुलन पैदा होने में कोई बाधा आती है तो आंखें टेढ़ी हो सकती हैं। अगर दोनों में से किसी एक आंख में ज्यादा दोष हो तो संतुलन पैदा नहीं हो पाता।

छोटी आयु में कई बार तेज या लंबी अवधि वाला बुखार, चेचक, कुपोषण या क्षय रोग की बीमारी, दिमाग पर रोगाणुओं का असर, ज्यादा दस्त लगना आदि आंखों की मांसपेशियों पर गलत असर डाल कर भेंगापन पैदा कर सकते हैं।

एक बार आंखों में पूर्ण संतुलन हो जोने के बाद भी भेंगापन हो सकता है। पर छोटी आयु में बच्चों की आंखों का समुचित ध्यान रखा जाए तो भेंगेपन से बचा जा सकता है। बच्चे में समझ आने के बाद यह बेहद जरूरी है कि उसकी दृष्टि की जांच करवा ली जाए। दृष्टि दोष रहित आंखों में भेंगेपन की आशंका कुछ हद तक कम रहती है। अगर दृष्टि दोष है तो बच्चे को साफ कांटेक्ट लेंस लगवाया जा सकता है क्योंकि इस के प्रयोग से बच्चे को दृष्टि

लाभ तो होता ही है, इस के अलावा वह हर प्रकार के खेल भी खेल सकता है। भेंगापन हो जाने पर तुरन्त अनुभवी नेत्र चिकित्सक से हर तरह की जांच करवाना अति आवश्यक है। दृष्टिदोष के अलावा आंखों के अन्दर के परदे की जांच (फडस्कोपी), भेंगेपन की डिगरी की जांच (सिनेप्टोफोअर द्वारा) एवं मांसपेशियों की ताकत की जांच कराना बेहद जरूरी है। आंखों की मांसपेशियों की पूर्ण जांच एवं कसरत की क्रिया को ओरथोप्टिक्स कहा जाता है।

यदि भेंगेपन की डिगरी कम मात्रा में है और कुछ दिन या महीने पहले की है तो ऐसे बच्चों का भेंगापन चश्मे या साफ्ट कांटेक्ट लैंस के इस्तेमाल से दूर हो सकता है। यदि बच्चा ५ साल से बड़ा है और समझदार है तो उस को चश्मे के प्रयोग के साथ साथ सिनेप्टोफोअर मशीन पर आंखों की मांसपेशियों की कसरत करवाएं। यह भेंगेपन के इलाज में सहायक होती हे।

भेंगेपन की शल्य क्रिया

भेंगेपन की डिगरी ज्यादा होने पर शल्य आपरेशन की जरूरत पड़ती है। विशेषज्ञ नेत्र चिकित्सक के हाथों आपरेशन कराने से आंखों को नुकसान पहुंचने का कोई डर नहीं रहता। आपरेशन कब किया जाए और किस प्रकार किया जाए यह भेंगेपन की मात्रा, उस के गुण, चश्मे व सिनेप्टोफोअर परिणाम और नेत्र चिकित्सक के अनुभव पर निर्भर करता है। मगर यह बात कमजोर होंगी या मरीज की उम्र ज्यादा होगी तो आपरेशन उतना ही कठिन होगा। अतः आपरेशन द्वारा भेंगेपन के इलाज के लिए अति उत्तम अवस्था ५ से १२ साल की है।

गेंदा

गेंदा फूलदार पौदों में से है। आम तौर से मन्दिरों, मस्जिदों और घरों के आगनों में सजावट के तौर पर लगाते हैं। इस का पौदा एक गज तक ऊंचा होता है पत्ते भंग के पत्तों जैसे होते हैं। फूल कटोरी जैसा पीले रंग का होता है। जिस की बहुत सी पंखड़यां होती हैं, बीज लम्बे और बारीक काले रंग के होते हैं। गेंदे के पत्ते और फूल दवा के तौर पर काम में लाए जाते हैं। गेंदा पेशाब खूब लाता है। इस के लिए इस के पत्तों को पानी में पीस छान कर पिलाते हैं। पेशाब जियादा लाने की वजह से गुर्दा, व मसाने की पथरी को भी निकाल देता है। गेंदा खूनी बवासीर को रोक देता है इस फायदे के लिए गेंगे के पत्ते १० ग्राम काली मिर्च सात दाने पानी में पीस छान कर पिलाते हैं।

गेंदा भिड़ों के जहर का तिर्याक है। अगर भिड़ काट खाए तो गेंदे के पत्तों को पानी में पीस छान कर पिलाएं और पत्तों को पीस कर काटी हुई जगह पर लगाएं, जलन तुरन्त दूर हो जाएगी और दर्द खत्म हो जाएगा।

गेंदा सूजन को खत्म करता है, जख्मों को सुखा देता है और दर्द को कम करता है। कभी औरतों के पिस्तान (छातियां) सूज जाते हैं और बहुत तकलीफ देते हैं शुरूअ शुरूअ में गेंदे के पत्ते पीस कर लेप करें लेकिन अगर सूजन पकने लगे तो गेंदे के पत्तों की भुज्या बना कर बांधें। सूजन पक कर फूट जाए गी और जखम इन ही पत्तों की पुल्टिस बान्धते रहने से अच्छा हो जाएगा।

दादा और एक्जीमा भी इस के फोलों का रस लगाने से अच्छे हो जाते हैं। अच्छा यह है कि पहले रस लगाएं और फिर फूलों के फूक को पुल्टिस की तरह बान्धें।

कान में दर्द हो तो गेंदों के पत्तों का पानी निकाल कर हल्का गर्म कर के दो चार कतरे टपकाने से दर्द दूर हो जाता है। अगर दान्तों में दर्द हो तो पत्तों को पानी में उबाल कर कुल्लियां करने से दूर हो जाता है। (दीहाती मुआलिज)

सम्पादक के नाम

मोहतरम जनाब

सम्पादक डॉ० हारून रशीद सिद्दीकी सच्चा राही लखनऊ को सांगली महाराष्ट्र से मुसा सैयद हसन सैयद का सलाम ।

मैं दो साल से मुसलसल आपके सच्चाराही का कारी हूं आपका पर्चा मुझे बेहद पसंद आया शिद्दत से आपके परचे का इंतेजार करता हूं जब तक मेरे हाथ में परचा न आये तब तक बेचैन रहता हूं। इस परचा के जरिये अल्लाह के फज्लो करम से बहुत सारी दीनी और दुन्यावीं मालूमात हासिल हुई है। और उम्मीद करता हूं कि इसी तरह मुस्तक्बिल में मालूमात हासिल होती रहेगी।

दुआ गो हूं कि अल्लाह आपकी भी मदद फरमाए और हमारी भी और इस परचे के नश्र व इशाअत में भी। बकाया रकम डी.डी. १०० रूपये की रवाना कर रहा हूं। ता के हमारा महबूब परचा "सच्चा राही" माजी की तरह मुस्तक्बिल में हर माह आता रहे।

मुसा सैयद हसन सैयद

सत्य घोषणा

शिक्षा है इस्लाम की
पूजा बस भगवान की
कहते हैं हम उसको अल्ला
दोष रहित है वह तो वल्ला
नाम हैं उसके अच्छे अच्छे
नतमस्तक सब उसको होते
कोई उसे परमेश्वर कहता
और कोई है ईश्वर कहता
नाम गाड है कोई रखाता
श्री अकाल कोई कहता
जो चाहो तुम नाम उसे दो
है आवश्यक दोष रहित हो
पूज्य न उसके गैर को मानो
बात है सच्ची दिल से जानो
भेजे दूत हजारों उसने
परिचय रब का दिया है सब ने
अन्तिम दूत मुहम्मद आये
जग को प्रेम सन्देशा लाये
सृष्टि में वो हैं सबसे उत्तम
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
उन्होंने ने आदर सबको सिखाया
एक पूज्य है हमें बताया
माने पूज्य जो उसके अतिरिक्त
रहें सदा फिर नरक में दण्डित
ईश शरण हम उससे मांगें
शिर्क पाप से दूर ही भागें
दृष्टि प्रेम की डालें जिसपर
ईश कृपा हम मांगे उस पर
इसी अर्थ में करो सलाम
मानव को ना करो प्रणाम
सृष्टि में सबसे बड़े मुहम्मद
उन पर भी हम मांगे रहमत
कअबा जो है किब्ला हमारा
उसको भी सज्दा नहीं गवारा
रब्बे कअबा पूज्य हमारा
उसी को सज्दा होता हमारा
माता पिता से प्रेम हैं करते
देश पे अपने हम हैं मरते
मन से सब का आदर करते
नहीं हम उनके आगे झुकते

देश की रक्षा करने खातिर
सर हैं देने को हम हाजिर
पूज्य तो हम बस ईश को कहते
पूज्य देश को कह नहीं सकते
पूज्य नहीं हैं मुहम्मद प्यारे
जो हैं सृष्टि में सबसे न्यारे
मक्का मदीना प्रिय हैं हम को
पूज्य नहीं हम कहते उनको
देश की धरती हम को प्यारी
पूज्य नहीं पर वो है हमारी
आग में हम जल जाएंगे
पर पूज्य उसे न बनाएंगे
बेशक वो है हमारी माता
पर वो नहीं हमारी दाता
उस पे हमारी जान निछावर
पर वो नहीं हमारी दावर
प्यारे वतन के प्यारे निवासी
इसी वतन के हम भी बासी
नहीं प्रेम में कमी हमारे
जब चाहो तुम परखो प्यारे
जब बाडर पर वक्त पड़ेगा
बुरी नजर से शत्रु बढ़ेगा
लेकर हम बन्दूक और भाले
रहेंगे तुम से सुन लो आगे
देश का कण कण हम को प्यारा
पर वो नही है पूज्य हमारा
प्रिय है हम को देश हमारा
पर ईमान है उस से प्यारा
ईश के अतिरिक्त पूज्य नहीं है
सुन लो बस ईमान यही है
मानें पूज्य जो उसके अतिरिक्त
जलें सदा हम नरक में दण्डित
मौत जहां नहीं आए गी
दण्डित को तड़पाए गी
शरण ईश की मांगो उससे
बात यही हम कहेंगे सबसे
प्राण देश पर करेंगे कुर्बां
पर ना देंगे हरगिज़ ईमां
ईश हमारी मदद करेगा
कृपा अपनी हम पे करेगा।

इन्सानी किर्दार की तश्कील में

अतीया ख़लील अरब

क़ल्बे सलीम की अहम्मीयत

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपनी कायनात हमारे इख्तियार में दे कर हर अहले ईमान मुस्लिम से यह चाहता हे कि वह सिर्फ़ उसी की बन्दगी करे तो दुनिया की तमाम ताकतें उस की गुलामी करेंगी उस का नूर कदम कदम पर हमारी रहनुमाई करेगा। जिस को उस का नूर मिल जाए उस को दुनिया से आखिरत की राहें रौशन मिलेंगी न कहीं तारीकी होगी न गुमराही का खतरा होगा। शर्त यह है कि हमारा ईमान कामिल हो और हमारा किर्दार एक मुस्लिम का किर्दार हो, वर्ना अमल में कोताही का तकाज़ा यक होगा कि हम अपने ईमान की तजदीद करें। हम भला क्या चीज़ हैं जब रसूलुल्लाह (सलल्लाहु अलैहिवसल्लम) के सहाबा को हुक्म दिया गया :

ऐ ईमान वालो ईमान लाओ अल्लाह पर उस के रसूल पर मतलब यह है कि ईमान तो ला चुके हो ईमान को ताज़ा करते रहो।

हम अगर इस पर ध्यान दें जिस मौकिअ पर यह आयत उतरी थी तो हमारे दिल की धड़कन तेज़ हो जाएगी और अगर अपने अमल की कोताही का इहसास हो आंखो से गर्म गर्म आंसू रवां हो जाएंगे। ऐसा मअलूम होता है कि यह हुक्म हमें दिया जा रहा है।

मतलब यह है कि जब मैं ज़बान से दअवा करता हूँ कि मैं मुस्लिम हूँ तो कांप उठता हूँ इस लिये कि मुझे इस इकरार की मुशकिलात का इल्म है और वह यह कि इसका तकाज़ा अमल और मुसलसल अमल है। किसी नाफ़रमानी या कोताही की गुंजाइश नहीं रखी गयी है।

हमें मअलूम होता है कि हम को मुख़ातब किया जा रहा है लिहाज़ा हम सब को ईमान ताज़ा करना चाहिये तब ही हम को अल्लाह का नूर नसीब होगा। अगर हम हिदायत की सच्ची लगन और तड़प रखते है।

रब्बुल इज़्ज़त जिसका सीना इस्लाम के लिये खोल देता है उसके दिल में इस्लाम घर कर लेता है वही मुस्लिम होता है। मुस्लिम के मअना झुकने वाला फ़रमाबरदारी करने वाला, किसी किस्म के शक व शुब्हे के बिना जिन्दगी भर इताअत करने वाला, ख्वाहिशे नफ़्स को भूल कर सिर्फ एक अल्लाह की बन्दगी करने वाला यही तौहीद का अकीदा एक मुस्लिम को हर क़िस्म की गुलामियों से आजाद कर देता है।

मुस्लिम जो पूरी सपुर्दगी के साथ एक अल्लाह का हो कर रह जाता है वह हर हुक्म पर कहता है 'सुना हमने,और मान लिया हमने'' इस लिये कि हमारा अन्दाज़ यहूदका नहीं होना चाहिये कि ''हम ने सुना लिया मगर मानेगें नहीं''

याद रखिये अल्लाह तआला के ज़िक से सुकून मिलता है यही ईमान वालों की शान होती है इसके बर अक्स जिस का दिल अल्लाह के जिक से पिघलता नहीं और कुर्आन करीम में दी खुश ख़बरी और डराने वाली आयात से धड़कता नहीं आंखों में आंसू नही आते कुर्आन पढ़ कर अपनी जिन्दगी के मअमूलात में तब्दीली नहीं लाना चाहता उस का दिल, दिल नहीं पत्थर है।

मगर देखा गया है कि हम ही जैसे लोग कुर्आन करीम की तिलावत करते भी हैं तो किसी कौम की हलाकत या तबाही के अस्बाब जान कर सरसरी गुजर जाते है और तर्जुमा पढ़ते हैं तो यह सोच कर मुतमइन हो जाते है कि जहन्नम तो काफिरों के लिये है या यह तो यहूद व नसारा, या मुनाफिक़ीन या फिर मुशरिकीने मक्का के बारे में है हम तो मुसलमान हैं। वालिदैन और खान्दान के लोग नमाज़, रोज़ा हज और उम्रा भी कर आते हैं और ज़कात के पाबन्द हैं। हमारे मोहल्ले पड़ोस मे किसी की मौत हो जाए तो कुरआन खुवानी में शरीक हो जाते है, मतलब नहीं समझे तो तिलावत तो कर लेते है

हमारे बाज़ मुस्लिम घरानों में नयी नस्ल की अकसरयत का यही अलमिया (ट्रेज्डी) है बल्कि कुरआन करीम की तिलावत के दौरान यही अफ़सोस नाक रवय्या हुआ करता है. मसलन किसी की वफ़ात पर अगर कुरआन ख़्वानी का इन्तिजाम किया जाए तो हमारी पढ़ी लिखी औरतों की तिलावत के बीच सिर्फ़ वरक उलटने की आवाज़ आती है और वह शायद दिल ही दिल में कुरआन पढ़कर ईसाले सवाम में शरीक हो जाती है, यह भी देखा गया है कि इस मौक़े पर कभी कभार मिलने वाली औरतें आपस में

खुसर फुसर करती और जेरे लब मुस्कराती भी है तअज्जुब है कि बाज़ औरतें उस महफिल में बन संवर कर आती है, हमें इस मौके पर एक हदीस शरीफ़ याद आ गयी जिसमें हुजूर (स०अ०) ने पेशगोई (भविष्य वाणी) फ़रमायी थी कि लोगों पर एक ऐसा जमाना आने वाला है जब इस्लाम बराएनाम रह जाएगा और कुरआन करीम की तिलावत रस्मी तौर पर की जाएगी, कहीं यही तो वह ज़माना नहीं? हमने अपनी बात के बीच दिलों में ज़ंग (मोरचा) के बारे में एक हदीस शरीफ़ बयान की है, यहां सूरः अलमुतफ़फ़िकीन की एक आयत सुनये अल्लाह तअला ने फरमाया हरगिज़ नहीं, बल्कि उनके दिलों पर उनके बुरे अअ़माल का ज़ंग(मोरचा) चढ़ गया है, बात तो मक्के के काफ़िरों की है कि वह "हिसाब के दिन को फ़र्जी क़िस्सा बनाने की बेकार कोशिश इसलिये कर रहे थे कि उनके दिलों पर उनके गुनाहो का जंग (मोरचा) लग गया था तो उनको एक सही बात फ़र्जी क़िस्सा नज़र आती रही, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस की शरह यूं बयान फ़रमाई कि जब इन्सान एक गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक काला नुक़ता लग जाता है अगर वह बराबर गुनाह करता चला जाए तो पूरे दिल पर वह नुक़ता छा जाता है" इस तरह वह दिल जिसकी अल्लाह और रसूल (स०) की नज़र में बड़ी अहमियत है पूरा का पूरा सियाह होकर रह जाता होगा। हमने कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में अपने मुस्लिम घरानों का तजाज़िया किया है शायद हमारे दिल भी जंग आलूद हो गये हैं वर्ना हमारी खवातीन आज दुन्यवी तअ़लीम के मैदान में मर्दो से आगे बढ़ गई हैं साइन्स में टिक्नालोजी में यहां तक कि हवा बाज़ी में भी उनका नाम है, लेकिन हमारी बदकिसमती यह है कि मुसलमान गारजियन अपनी औलाद की बचपन की दीनी शिक्षा को अहमियत नहीं देते सिर्फ़ ऊँची शिक्षा और दीक्षा का इन्तिज़ाम करते और 'उसी पर फ़ख करते है, कुरआन करीम की ऊँची शिक्षा यह है कि उस को अदब (सम्मान) से पढ़ा और समझा जाए, अमल किया जाए, कुरआन मजीद ही का इरशाद है बाज़ पत्थर ऐसे भी हैं जिनसे चशमे फूट पड़ते हैं और बाज़ अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से पहाड़ से टूट कर गिर भी जाते है, हमारे दिल शायद पत्थर से भी ख़राब हो गए हैं सूरः हश्र में इरशाद हुआ (ऐ नबी अकरम अगर हम इस कुरआन को किसी पहाड़ पर नाज़िल कर देते तो तुम उसको अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से दबा, झुका, और टुकड़े टुकड़े होता हुआ देखते) यहां यह इरशाद नबवी याद रखना चाहिये कि "कुरआन मजीद क़ियामत के दिन तुम्हारे हक़ में हुज्जत होगा या तुम्हारे ख़िलाफ मुक़दमा करेगा पढ़ा भी तो अमल की नियत नहीं की, यह तो कुरआन हकीम को अपने हक में गवाह के लिये जरूरी है कि हम कुर्आन मजीद के साथ अपना रवय्या दुरूस्त कर लें और यह जानना भी ज़रूरी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया : मुसलमान की कब्र में कुर्आने करीम इन्सानी शक्ल में आता है तो उस की कब्र नूर से भर जाती है यह उस के लिए है जो रोज एक खास वक्ते मुकर्ररा पर पाबन्दी से तिलावत करता हो और मरते दम तक उस पर काइम रहा हो तो उसी वक्ते मुकर्ररा पर कुर्आने करीम कब्र को रौशन करता है। कलामे इलाही की बरकत से ठण्डक और खुश्बू होती है।

हमारा ईमान है कि मौत बरहक है और कियामत भी बरहक है, कब और कैसे इस का इल्म सिर्फ मालिके यौमिद्दीन को है कुफ्फारे मक्का महज मजाक उड़ाने के लिये बार–बार हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से सुवाल किया करते थे कि आखिर कियामत कब आएगी ?

इस सुवाल के जवाब में अल्लाह तआला ने हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से फरमाया : यह लोग आप से कियामत के बारे में सुवाल करते हैं कि वह कब डेरा डालेगी (आएगी) भला आप का उस घड़ी से क्या तअल्लुक है? उस का इल्म तो बस अल्लाह तआला पर खत्म है। आप तो सिर्फ उस दिन से डराने वाले हैं उस को जिसे उस घड़ी का डर हो। मतलब यह कि जो हिसाब के दिन से कांपता हो, उस की नीन्द उड़ जाती हो अल्लाह के हिसाब और तसव्वुर से थर्राता हो यह हालत सिर्फ उस मुस्लिम की होती है जिस का कियामत पर ईमान हो।

अल्लाह तआला हर मुसलमान को, मुझे और आप को कल्बे सलीम अता फरमाए और कियामत के दिन रुस्वाई से अपनी पनाह और अपनी अमान में रखे। आमीन !

Mob. 9336230892
2462215
खालिद हुसैन चिश्ती
इंजीनियर्स मार्बल
डीलर
हर प्रकार के मार्बल
ग्रेनाइट एवं टाइल्स
जाजमऊ, लखनऊ कानपुर रोड, केसा के सामने, कानपुर

रहम दिल राजा

किसी देश में एक राजा था। वह बड़ा दयावान बड़ा रहम दिल था। उस के देश में हर धर्म के लोग रहते थे। वह किसी पर किसी प्रकार का भी जुल्म न करता था। उस ने एक चिड़िया घर बना रखा था जिस में दुन्या भर के भांति–भांति के जीव–जन्तु तथा पंख पखेरू पाल रखे थे। हाथी, घोड़ा, शेर, चीता, भालू, बन्दर, भेड़िया, सियार, तेन्दुवा, बिज्जू, वन मानुस, हुक्कू हर हर प्रकार के जानवर, हर प्रकार की चिड़िया, हर प्रकार के सांप, कोबरा, अजगर आदि पाल रखे थे। राजा खुद महीने में कभी एक कभी दो बार अपना चिड़िया घर देखने जाता था। चिड़िया घर के तमाम जीव जन्तु तथा पखेरू स्वस्थ थे। सब के चारे पानी तथा दवा इलाज का उस ने बड़ा प्रबन्ध कर रखा था। राजा की सारी प्रजा बड़ी खुशहाल थी।

एक दिन राजा की समझ में आयाकि हमारे राज में बहुत से लोग जानवरों को काट कर उस का मांस खाते हैं यह तो बड़ी निर्दयता (बे रहमी) है। उस ने अपने वजीर को बुला कर कहा कि एअलान कर दिया जाए कि हमारे राज्य में किसी पशु पक्षी को मारना काटना मना है। वजीर ने कुछ समझाने की कोशिश की परन्तु राजा न माना। वजीर ने घोषणा कर वा दी और सिपाहियों को आदेश दे दिया कि इस का विरोध करने वाले को दण्ड दिया जाए। राजा का हुक्म पूरे देश में लागू हो गया।

दूसरे दिन चिड़िया घर का हेड आया और रिपोर्ट दी कि शेर और चीते भूखे हैं वह कुछ नहीं खा रहे हैं। राजा ने कहा उन को अच्छे से अच्छा खाना दो परन्तु मांस मत दो। इस पर अमल रहा। एक हफता बाद खबर आई कि अब शेर चीते भूख के मारे चल नहीं पा रहे हैं वह थोड़े ही दिनों बाद मर जाएंगे। राजा खुद देखने गया। वजीर ने समझाया शेर मांस के सिवा कोई चीज नहींखाते। यह मांस खाए बिना जीवित नहीं रह सकते। राजा को सुन्दर शेरों से बड़ा प्रेम था। आखिर उसने कहा कि जब यह तै है कि पड़वा काटे बिना शेर जीवित न रहेगा। जब एक की जान जाना आवश्यक है तो हमारा प्रिय शेर क्यों मरे। अतः पड़वा काटा जाए और शेर को खिलाया जाए। अब राजा की समझ में आया कि उसका नियम गलत है उस ने एअलान कर वा दिया कि पहले ही की तरह मांसाहारी लोग पशु पक्षियों को जब्ह कर मांस खा सकते हैं।

जीवे जिव आहार है
बिना जीव जीवे नहीं

(पृष्ठ ४० का शेष)

दुनिया को यूं ही डरा दिया था ब्रिटेन ने !

ब्रिटिश विमानों को उड़ाने की योजना के खुलासे ने पूरी दुनिया में हलचल मचा दी थी। ब्रिटेन में इस योजना को लेकर २४ संदिग्ध पकड़े गये हैं और इनमें से १५ के खिलाफ आरोप भी तय हो गए हैं। इसके बावजूद अब तक मिले साक्ष्यों से साफ नहीं हो पाया कि इस तरह की कोई योजना बनी भी थी या नहीं।

अमेरिका के अखबार 'न्यूयार्क टाइम्स' के अनुसार अब तक मिले साक्ष्यों से यह तो स्पष्ट हो गया कि ब्रिटेन में हमला तुरंत नहीं होने वाला था, जैसा कि ब्रिटिश अधिकारियों का दावा है। इसके उलटे न्यूयार्क टाइम्स लिखता है कि अगर हमले की योजना आखिरी चरण में होती तो पकड़े गए संदिग्धों के पास कम से कम पासपोर्ट तो होता ही, जिससे वे विमान पर जा सकते। अखबार ने यह तथ्य ब्रिटेन के वरिष्ठ अधिकारियों के हवाले से लिखा है। अखबार में यूरोप, ब्रिटेन और अमेरिका के कई वरिष्ठ अधिकारियों का साक्षात्कार शामिल है।

लेबनान में क्लस्टर बमों का इस्तेमाल अनैतिक

संयुक्त राष्ट्र लेबनान में लड़ाई के आखिरी दौर में इजराइल द्वारा क्लस्टर बमों के इस्तेमाल पर संयुक्त राष्ट्र ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उसने कहा कि इजराइल द्वारा बमों का इस्तेमाल पूरी तरह अनैतिक है।

इस विश्व संस्था में मानवीय मामलों से जुड़े एक शीर्ष अधिकारी ने इस सन्दर्भ में कहा – 'अभी लेबनान के ३५६क्षेत्रों में करीब एक लाख बिना फटे क्लस्टर बम बिखरे पड़े हैं। इन रिहाइशी इलाकों में महिलाएं और बच्चे भी हैं। अधिकारी ने इजराइल के जवाब में ज्यादतीपूर्ण और जरूरत से ज्यादा बताया। उसका कहना था किं इन बमों का प्रकोप लोगों को महीनों, संभवतः वर्षों झेलना पड़ेगा। इस बीच संयुक्त राष्ट्र लेबनान में पुनर्निर्माण और अधिकृत फिलस्तीनी क्षेत्र बदहाल होती जा रही मानवीय स्थितियों को सुधारने के लिए स्टाकहोम में होने जा रहे मामले में अंतरराष्ट्रीय समुदाय से अरबों डालर के योगदान का आग्रह करेगा। उपर्युक्त अधिकारी ने बताया कि लेबनान के लिए नौ करोड़ डॉलर प्राप्त हो चुके हैं। लेकिन वहां अभी अरबों डालर की जरूरत है। हालांकि अब करीब ७५ फीसदी लोग लौट चुके हैं लेकिन उन्हें आवास और बुनियादी सुविधाओं का भीषण अभाव झेलना पड़ रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

मुस्लिमों को बेवजह बदनाम न करें : पी०एम०

नई दिल्ली । मुस्लिम समुदाय की आशंकाओं को दूर करते हुए प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा कि आतंकी घटनाओं के लिए किसी विशेष समुदाय को जिम्मेदार ठहराना गलत है। उन्होंने कहा कि आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई के पीछे मजबूत शहादत होनी चाहिए।

आतंकवाद की समस्या पर मुस्लिम उलमाओं की एक बैठक में प्रधानमंत्री ने कहा कि आतंकी घटनाओं के लिए हमेशा मुस्लिम समुदाय को जिम्मेदार ठहराने की कोशिशों की उन्होंने हर दम आलोचन की है। प्रधानमंत्री से मुस्लिम नेताओं ने शिकायत की थी कि पुलिस और कानूनी एजेंसियां निर्दोष मुसलमानों को निशाने पर रखती हैं जिससे समुदाय में असुरक्षा की भावना आ गई है। प्रधामंत्री ने कहा कि यह कभी–कभी होता है लेकिन हमेशा नही। उन्होंने यकीन दिलाया कि इन सभी मुद्दों पर बातचीत के लिए वह मुख्यमंत्रियों की बैठक बुलाएंगे। डॉ० सिंह ने कहा कि मैं आपका दर्द और तकलीफ समझता हूं। उन्होंने आतंकियों को•धोखेबाज करार दिया और कहा कि आतंकवाद का सफाया किसी भी कीमत पर होना चाहिए। प्रधानमंत्री ने इस काम में मुस्लिम नेताओं से भी सहयोग की अपील की।

अमेरिका ने किया परमाणु परीक्षण

वाशिंगटन । नेवादा भूमिगत परीक्षण स्थल पर अमेरिका ने एक सफल 'सबक्रिटिकल' परमाणु परीक्षण किया। अमेरिका के ऊर्जा विभाग ने यह जानकारी दी। वर्ष १९९७ के बाद से यह २३वां परीक्षण है। एक अन्य जानकारी के अनुसार अमेरिका अस्लाका से लंबी दूरी तक मार करने वाले एक बैलिस्टिक प्रेक्षेपास्त्र को छोड़ने के बाद केलिफोर्निया में इसे नष्ट करने के लिए प्रक्षेपास्त्र रोधी रक्षा प्रणाली का परीक्षण करने की तैयारी में है।

अमेरिका के कई सामाजिक संगठनों और कार्यकर्ताओं ने परीक्षण का विरोध करते हुए इसे समग्र परमाणु परीक्षण निषेध संधि (सीटीबीटी) के खिलाफ बताया। उनका कहना है कि बुश प्रशासन परीक्षणों के जरिये नए परमाण हथियार विकसित करने का प्रयास कर रहा है।

ठंडा मतलब कीड़े मारने की दवा !

नई दिल्ली। सेंटर फार साइंस एंड एनवारनमेंट (सीएसई) ने शीतल पेय कंपनियों को मुसीबत में डाल दिया है। सीएसई का कहना है कि भारत में बिक रहे शीतल पेयों में जहरीले कीटनाशकों की भरमार है। वर्ष २००३ में भी इसी संस्था ने शीतल पेयों में कीटनाशक होने का खुलासा किया था जिस पर देश भर में हंगामा मचा था। सरकार को जांच के लिए संयुक्त संसदीय समिति बनानी पड़ी थी।

सीएसई ने दावा किया कि देश में बिक रहे शीतल पेय सुरक्षित नही हैं। कोका कोला और पेप्सी कोला के १२ राज्यों में फैले २५ कारखानों से लिए गए ११ ब्रॉण्ड के ५७ नमूनों की जांच से पता चला कि इनमें २००३ से भी ज्यादा जहरीले पदार्थ मौजूद हैं। तब तीन कीटनाशक मिले थे इस बार पांच मिले हैं। पेप्सी में तय मात्रा से औसतन ३० गुना व कोका कोला में औसतन २७ गुना ज्यादा कीटनाशक मौजूद हैं। संस्था का दावा है कि इन शीतल पेयों में भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा तय मानदण्डों से औसतन २४ गुना ज्यादा कीटनाशकों के अवशेष मिले हैं। संस्था का कहना है कि कोलकाता से मिले कोका कोला के नमूने में मानक ब्यूरो के तय स्तर से १४० गुना ज्यादा लिंडाने नामका कीटनाशक मिला है। ठाणे से लाए गए कोका काला के नमूने में न्यूरोटॉक्सिन क्लोरोपाइरिफोम नामक कीटनाशक तय मानक से २०० गुना ज्यादा मिला। सीएसई की निदेशक ने कहा कि ये कीटनाशक बेहद घातक हैं।

पेप्सी व कोका कोला ने सीएसई के दावों पर कहा है कि उनके पेय मानकों पर खरे हैं। खाद्य प्रसंस्करण मंत्री ने कहा कि उपभोक्ता गड़बड़ी की शिकायत कर सकते हैं, जिस पर जांच कराई जाएगी।

(शेष पृष्ठ ३६ पर)